महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ६० **अंक** : ०७

दयानन्दाब्द: १९४

विक्रम संवत्: वैशाख कृष्ण २०७५

कलि संवत्: ५११९

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११९

सम्पादक

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर

वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

परोपकारी का शुल्क

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु.
त्रिवार्षिक-५८० रु.
आजीवन (१५ वर्ष)-२००० रु.
एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डॉलर
द्विवार्षिक-९५ पाउण्ड/१५२ डॉलर
त्रिवार्षिक-१४० पाउण्ड/२२५ डॉलर
आजीवन (१५वर्ष)-५००पा./८०० डॉ.
एक प्रति - ३ पाउण्ड
एक प्रति - ४ डॉलर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

अप्रैल प्रथम २०१८

अनुक्रम

०१. नारी उत्थान में महर्षि का योगदान	सम्पादकीय	०४
०२. मृत्यु सूक्त-३	डॉ. धर्मवीर	०६
०३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	०९
०४. आर्य संस्कृति और योग साधन	आ. उदयवीर शास्त्री	१४
०५. परम-धर्म	तपेन्द्र वेदालङ्कार	१७
०६. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		२०
०७. निरन्तर पथ का पथिक आर्य...	मोहनलाल तँवर	२२
०८. मन्त्र-ब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्	डॉ. महावीर मीमांसक	२४
०९. शङ्का समाधान- २२	डॉ. वेदपाल	२६
१०. स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज...	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	२७
११. शिवभक्त जानें ज्योतिर्लिंगों का सच	आ.सूर्यादेवी चतुर्वेदा	३१
१२. महाशय राजपाल जी	सोमेश 'पाठक'	३७
१३. संस्था-समाचार		४०
१४. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

सम्पादकीय

नारी उत्थान में महर्षि का योगदान

वर्तमान युग कहने को तो बहुत प्रगतिशील, तर्कवादी और वैज्ञानिक सोच का युग है, परन्तु जब इस युग में प्रभावी समस्याओं पर दृष्टिपात करते हैं, तो बहुत निराशा होती है। राजनीतिक, सामाजिक, वैयक्तिक समस्याओं से व्यक्ति हर स्तर पर जूझ रहा है। इन समस्याओं का समाधान क्या है? इस पर बहुत-से चिंतन और विचार सामने आते हैं, परन्तु कोई भी प्रभावी नहीं हो पाता। इतिहास का सूचना-भंडार हमारे सामने मौजूद हैं, परन्तु इतिहास को सही परिप्रेक्ष्य में समझने का बोध उत्तरदायी या समर्थजनों में शायद नहीं है।

वैदिक दृष्टिकोण से हम आर्यजन प्रत्येक समस्या पर विचार करने के अभ्यस्त हैं। ऐसा होना भी चाहिए, क्योंकि हमारा मानना है कि इसी दृष्टिकोण से विचार करने पर हम प्रत्येक समस्या का समुचित निदान पा सकते हैं। वेदों पर आधारित अन्य वैदिक साहित्य और महापुरुषों ने हमें पदे-पदे मार्गदर्शन दिया ही है। अत: हमें उनकी अवहेलना न करते हुए समस्याओं का समाधान खोजना चाहिए।

आज एक विकराल समस्या महिलाओं के उत्पीड़न की है। वैज्ञानिक युग में, उदारवादी सोच और विपुल कानूनी प्रावधानों के बावजूद आज भी स्त्री प्रताड़ित और शोषित है, अकल्पनीय अत्याचारों की शिकार है। आखिर दोष कहाँ है? हमारे विचार में दोष सोच में है। विभिन्न संचार-माध्यमों ने नारी के प्रति एक संकुचित और विकृत सोच को जन्म दिया है, जो उसे स्वेच्छाचारिणी और भोग्या के रूप में देखने का संस्कार या विकार शिक्षा एवं समाज में प्रारम्भिक स्तर से उत्पन्न करता है। इस विकृत सोच या मानसिकता को स्त्री-स्वातन्त्र्य का बाना पहनाकर प्रस्तुत किया गया है, ताकि स्त्री इस आकर्षण में आबद्ध रहकर लम्पटों का शिकार बनती रहे।

ऐसे में किसी भी पुरातन या शास्त्रीय विचार को पिछड़ा या प्रतिगामी कहकर तुरन्त खारिज किया जा सकता है या फिर ऐसा विचार देने वालों की बौद्धिक कुटाई-पिटाई की जा सकती है। परन्तु जब तथ्यों और तर्क की कसौटी पर हम शास्त्रीय, विशेषत: वैदिक विचारों को परखते हैं, तो हमें स्पष्ट प्रतीत होता है कि वैदिक मार्ग के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग स्त्री के उद्‌गार का और उसे न्याय दिलाने का है ही नहीं। विचारिए कि वैदिक साहित्य में नारी ब्रह्मवादिनी है, देवी है, साम्राज्ञी है, शिक्षिका है, विदुषी है, नेत्री है, उपदेशिका है, पूज्या है और प्रकाशिका है। पति की सर्वोत्तम मित्र और सचिव भी वही है। यदि इन गुणों की धारणकर्त्री को आदर्श जानकर चला जाए, तो कौन उसे सम्मान नहीं देना चाहेगा? दुर्भाग्य से मध्यकाल में विपरीत विचारों वाले विदेशी आततायियों का देश में शासन होने पर स्त्रियों की दुर्दशा प्रारम्भ हुई। उनको सहेजकर रखने वाली '**वस्तु**' के रूप में रखा गया। उनको बंधन में रखने के लिए स्मृतियों और विधानों की रचना की गई। परन्तु, भारतवर्ष में उन्नीसवीं शताब्दी में उनके एक उद्‌घाटक का आविर्भाव हुआ, जो मानवमात्र के परम हितैषी सिद्ध हुए। वे '**ऋषि**' की पदवी के योग्य महामानव थे।

दयानन्द का ऋषित्व यह था कि वेदार्थ को समझने के अधिकारी होने की योग्यता तो उनमें थी ही, परमात्मा के सत्यस्वरूप और न्यायकारी होने का गुण भी उनमें मानवीय सामर्थ्य की सीमा तक विद्यमान था। वे प्राणिमात्र के प्रति सहानुभूति की भावना को सत्य का ही अंश समझते थे। स्त्री-पुरुष में असमानता का बर्ताव उन्हें असह्य था। महर्षि ने वेदों के प्रमाणों और तर्क के आधार पर पुरुष और नारी की समानता का उद्‌घोष किया। उनका कथन था ''ईश्वर के समीप स्त्री-पुरुष दोनों बराबर हैं। कारण, ईश्वर न्यायकारी है। अत: उसमें पक्षपात का लेश भी संभव नहीं है।'' पुराकाल में जो स्त्री परिवार की धुरी की भाँति थी, संतति की निर्मात्री थी, जिसके बिना समाज में विद्या और शिक्षा का प्रचार और प्रसार संभव नहीं था। उसे ही विद्या-विहीन और सामाजिक कार्यों से विरत कर घर की सीमा में पशु की भाँति बाँध दिया गया था। महर्षि की विचारधारा ने स्त्री-जगत् को यह साहस दिया कि वह अपनी पीड़ा और अपनी दुरवस्था के विचारों को प्रकट कर सके।

महर्षि दयानन्द ने अपने उद्‌बोधन, पत्रों तथा अन्यान्य लेखन में सर्वत्र महिला-उत्पीड़न के विरुद्ध कार्य करने के निर्देश दिए हैं। यद्यपि महाभारत युद्ध के बाद समाज में अनेक दुर्गुणों का समावेश हो गया था और जहाँ राजधर्म विखण्डित हुआ वहीं समाज में विभिन्न प्रकार की दुर्नीतियाँ प्रचलित हो गईं। 8वीं शताब्दी के बाद इस्लामी आक्रमण के प्रारम्भ होने से भारतीय

समाज में नारी की दशा और भी दयनीय होती गई। पुरुषों का वर्चस्व और नारी को हेय मानने की प्रवृत्ति बढ़ती ही गई। जबकि प्राचीन भारतीय सत्शास्त्रों में नारी की गौरवमयी स्थिति विद्यमान थी, जिसके अनुसार नारियाँ सभा और समिति में भाग लेती थीं, युद्धों में और खेलों में उनकी भागीदारी थी, विदुषी और ब्रह्मवादिनी महिलाओं के नाम भारतीय इतिहास में बिखरे पड़े हैं। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सामान्यतया महिलाओं के अधिकार सुरक्षित थे, भले ही वैदिक शास्त्रों से इतर ग्रन्थों में यत्र-तत्र उनके अधिकारों का अतिक्रमण किया गया हो, लेकिन वे वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध होने के कारण स्वीकार नहीं किए जा सकते।

महर्षि ने नारी की दशा को देश में भ्रमण करते हुए अनुभव किया था। इसीलिए उन्होंने स्त्री-शिक्षा, स्त्री के विवाह की उम्र, स्त्री की समाज में सक्रियता, उनकी शिक्षा इत्यादि के संबन्ध में लिखा और अपने भाषणों में भी इस विषय पर पर्याप्त प्रवचन किया। उन्हीं के उपदेशों का अनुसरण कर बाद के आर्य नेताओं ने कन्या-गुरुकुल, कन्या डीएवी कॉलेज, स्त्री आर्यसमाज इत्यादि संगठनों का निर्माण किया और महिलाओं के बीच जागृति उत्पन्न करके उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का महनीय कार्य किया।

उदाहरण रूप में हम चर्चा करें, तो एक साहसी महिला थी हरदेवी। इस अप्रसिद्ध-सी विधवा महिला ने 1881 में **स्त्री-विलाप** नामक एक कविता लिखी थी जिसके द्वारा तत्कालीन महिलाओं की स्थिति को बखूबी समझा जा सकता है। महिला सुधार हेतु उपर्युक्त हरदेवी का योगदान महत्त्वपूर्ण है। ये प्रसिद्ध रायबहादुर कन्हैयालाल की पुत्री थीं। कन्हैयालाल जी लाहौर के आधुनिक भवन-निर्माताओं में से थे। हरदेवी पहली ऐसी महिला थी जिसका महर्षि दयानन्द के उपदेशों के बाद विधवा-विवाह आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् और एडवाकेट रोशनलाल, बैरिस्टर एट लॉ के साथ बहुत विरोधों के बावजूद हुआ। बाद में रोशनलाल आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री चुने गए जिन्होंने इंग्लैण्ड से वकालत की डिग्री प्राप्त की थी। वे गौरक्षक और प्रसिद्ध समाजसुधारक थे। इन्हीं आर्यसमाजी रोशनलाल ने जब समाज के विरोध के बावजूद इस विधवा महिला से विवाह किया तो उसका कारण इस महिला के द्वारा महिला कल्याण के लिए किए जा रहे कार्यों से प्रभावित होना ही था। तत्कालीन एक अन्य प्रसिद्ध महिला जानकी देवी ने हरदेवी के विषय में लिखा था कि ''हरदेवी लाहौर के बैरिस्टर रोशनलाल की पत्नी, समाजसेविका, हिन्दी पत्रिका '**भारत-भगिनी**' की सम्पादिका थीं जो क्रांतिकारियों के मुकदमों में धन इकट्ठा करके सहायता देती रहीं।'' **आर्यसमाज के इतिहास में** सत्यकेतु विद्यालंकार ने **पटियाला षड्यंत्र केस** में हरदेवी द्वारा प्रकाशित समाचारपत्र '**भारत-भगिनी**' को राजद्रोहात्मक साहित्य मानकर उसे जब्त करने का उल्लेख किया है तथा रोशनलाल के योगदान को रेखांकित किया। स्पष्टतः हरदेवी ने आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के साथ-साथ पण्डिता रमाबाई से भी महिला कल्याण की प्रेरणा ली थी।

हरदेवी को पढ़ाई के लिए इंग्लैण्ड भेजा गया और यह माना जाता है कि वे पहली ऐसी हिन्दीभाषी महिला थीं जिन्होंने लंदन में जाकर बालिकाओं के लिए **किण्डर गार्डन** पद्धति से शिक्षा का अध्ययन किया। हरदेवी ने **भाग्यवती, सासपतोहु वामाशिक्षक, लंदन यात्रा, हुकुमदेवी-हिन्दू धर्म की उच्चता में एक सच्ची कहानी, सीमन्तनी उपदेश, स्त्रियों पर सामाजिक अन्याय, पुनर्विवाह से रोकना, भारत-भगिनी, स्त्री-विलाप** इत्यादि अन्यान्य पुस्तकों और पत्रकों की रचना की।

उपर्युक्त विदुषी महिला श्रीमती हरदेवी का उदाहरण इस कारण प्रस्तुत किया गया है कि तत्कालीन स्त्रीशिक्षा-विरोधी वातावरण में भी महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायियों ने किस प्रकार स्त्रीशिक्षा और उनकी अन्य समस्याओं के निराकरण हेतु जो कार्य किया; इसके महत्त्व को आज के शोधार्थी समझें और वर्तमान संदर्भों में वैदिक शिक्षा के दृष्टिकोण को अपनाएँ। स्त्रियों की महत्ता और स्वस्थ समाज के निर्माण में उनकी महती और शाश्वत भूमिका को केवल वैदिक दृष्टि से ही समझा जा सकता है, क्योंकि संस्कारों के सुदीर्घकालीन अभ्यास से ही वैचारिक शुद्धता संभव है, और ऐसी स्थिति का निर्माण होने पर ही स्त्रियों के प्रति सम्मान की भावना का उदय होगा और जिससे उनके प्रति अन्याय समाप्त हो सकेगा। स्त्रियों की शास्त्रोक्त महत्ता को समझना आवश्यक है, जहाँ कहा गया है-

यस्यां भूतं समभवद् यस्यां विश्वमिदं जगत्।
तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः।।

- दिनेश

मृत्यु सूक्त-३

डॉ. धर्मवीर

आचार्य धर्मवीर जी द्वारा वेद के सूक्तों पर दिये प्रवचनों की मांग प्रायः आती रहती है। ये व्याख्यान वेदमन्त्रों पर होने से वेद को आमजन के लिये भी बुद्धिगम्य बना देते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए इस प्रवचनमाला में इन्हीं व्याख्यानों को क्रमशः दिया जा रहा है। पाठक इस वेदज्ञान की गंगा में स्नान का आनन्द लें। -**सम्पादक**

क्रमशः....

हमने पिछले प्रसंग में देखा था कि मृत्यु से मनुष्य का सहज सम्बन्ध है क्योंकि मनुष्य का सहज सम्बन्ध जन्म से है। जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु अवश्यंभावी है। लेकिन यहाँ मन्त्र में कहा गया है कि मृत्यु उसको दुःखी करती है, या उसके लिए होती है जो देवयान से भिन्न मार्ग का अनुयायी होता है। अब यहाँ जो हमारे समझने की बात है कि संसार के दो रास्ते हैं और ये दो रास्ते दो तरह की प्रवृत्ति, दो तरह के लोग, दो तरह की इच्छाओं को प्रकट करते हैं। इसकी व्याख्या करते हुए **प्रश्नोपनिषद्** में एक बड़ा सुन्दर प्रसंग उठाया है। पहला ही प्रश्न है कि ये प्रजायें कैसे उत्पन्न होती हैं, ये प्रजा किससे उत्पन्न होती हैं, '**कुत इमाः प्रजाः प्रजायन्ते**'-यह प्रजा कैसे पैदा हुई है, किससे पैदा हुई है। तो वह कहता है कि हमारा जो परमेश्वर है, परमात्मा है उसने दो चीजें बनाईं-एक रयि और एक प्राण। संसार में हर चीज दो भागों में बँटी हुई है। संसार बनाने वाले ने संसार को बनाया और आगे चलाने के लिए एक व्यवस्था बनाई और उन दोनों को व्यवस्था में इस तरह से रखा कि वह अगले व्यक्ति के जन्म का, जीवन का कारण बनते रहें।

ये रयि और प्राण एक मिथुन बना अर्थात् एक जोड़ा बना। सारे संसार को उत्पन्न करने का आधार यही है। यह रयि और प्राण आगे चलकर क्या बने? कहता है, सूर्य और चन्द्र जो हैं, यही रयि और प्राण हैं। प्राण ही सूर्य है, रयि चन्द्रमा है। यह चन्द्रमा और सूर्य दो शक्तियों के प्रतीक मात्र हैं। एक सोम है, एक अग्नि है। यह सारा संसार अग्नि, सोम है। **अग्निसोमात्मकं जगत्** या यह संसार अग्नि और सोम का मिश्रण है। यह अग्नि और सोम से मिलकर कैसे बना? इसके लिए वो कहता है कि हमारे संसार में उत्तरायण है, दक्षिणायन है अर्थात् जो संवत्सर है जो समय है, उस समय के दो भाग हैं-उत्तरायण और दक्षिणायन। उसके भी दो भाग हैं-शुक्ल पक्ष है, कृष्ण पक्ष है। उसके भी दो भाग हैं-दिन है, रात है। यह जो विभाजन है इसी के आधार पर देवयान और पितृयाण है। जो रास्ता जल्दी से लौटकर नहीं आता है, दूर तक जाता है, परमेश्वर तक जाता है, उस रास्ते को देवताओं का रास्ता कहते हैं, अर्थात् देवयान कहते हैं। यान मार्ग को कहते हैं, तो वो यान देवयान है, देवताओं के जाने का रास्ता। दूसरा मार्ग है पितृयाण, जो पितर बनकर रहते हैं। पितर वो रहते हैं जो संसार में हैं, जो संसार के बनने से, बिगड़ने से सम्बन्ध रखते हैं। देवयान में मृत्यु का भय नहीं होता। क्यों नहीं होता? इसमें एक रोचक तथ्य है कि हम संसार में सुख के लिए जितने उपाय करते हैं उनको अच्छा समझकर करते हैं, किन्तु जब तुलना की बात आती है, जब हम दूसरे रास्ते से इस रास्ते को देखते हैं, अन्तर को समझते हैं तो पता लगता है कि यह रास्ता उस रास्ते की अपेक्षा श्रेष्ठ नहीं है, हीन है। इस हीनता को हमारे वर्तमान के लोग बिल्कुल अन्यथा समझ लेते हैं। इस अन्यथा समझने से संसार के जो अच्छे काम हैं वो भी निंदा की कोटि में आ जाते हैं। इसलिए कुछ लोगों की यह धारणा बन जाती है कि संसार में जिनको अच्छा काम कहा है, उनको भी करने का कोई लाभ नहीं है क्योंकि उनकी गिनती भी घटिया कामों के रूप में आती है।

इस दृष्टि से एक प्रसंग यहाँ उल्लेख के योग्य है-

उपनिषद् में एक प्रसंग आता है और वो प्रसंग यह है कि हम जो यज्ञ करते हैं, उसे बहुत अच्छी चीज मानते हैं और संसार में **'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'** कहते हैं। यज्ञ सबसे श्रेष्ठ कर्म है, या श्रेष्ठ कर्मों का नाम यज्ञ है। इतना ही नहीं, स्वर्ग की इच्छा वाले को यज्ञ करना चाहिए, ऐसा कहते हैं। किन्तु इसी पुस्तक में, इसी ग्रन्थ में एक प्रसंग आता है,

प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपा अष्टादशोक्तमवरं येषु कर्म।
एतच्छ्रेयो येऽभिनन्दन्ति मूढा, जरामृत्युं ते पुनरेवापि यन्ति।

जो लोग इस यज्ञ को करने वाले हैं, वो कहते हैं कि यह कोई बहुत बढ़िया साधन नहीं है। यह प्लवा ऐसी नौका है जो पता नहीं कब डूब जाए, ये शिथिल बंधनों वाली अर्थात् इसके अन्दर कभी दरारें हैं, कभी ढीलापन है, कभी निर्बलता है तो कब तक इसका लाभ उठा सकेंगे? कहता है–

एतत् श्रेयो ये अभिनन्दन्ति मूढा जरामृत्युं ते पुनरेवापि यन्ति।

जो लोग इसको अच्छा मानते हैं, वो इस जरा और मृत्यु के चक्र से कभी नहीं छूट सकते। अर्थात् ये जो हमारे काम हैं, ये अच्छे तो हैं लेकिन अच्छे होने के बाद भी जरा–मृत्यु से मुक्ति दिलाने वाले, छूट दिलाने वाले नहीं हैं। ये मूल रूप से पितृयाण मार्ग के काम हैं और श्रेष्ठ भी हैं। यह श्रेष्ठता हमारी इसलिये है कि इस संसार में जो कुछ हम अच्छा चाहते हैं, सुख चाहते हैं, वह सुख संसार में इन कार्यों से प्राप्त होता है, इसीलिए तो यह अच्छे हैं। यदि इनके बिना हम रहें, इनके बिना यदि संसार में हम जीना चाहें, तो वर्तमान भी दु:खमय होगा और उसका परिणाम भी दु:खमय होगा। इसलिये इन कामों को करते हुए हम संसार में सुखी रहते हैं और इनका परिणाम भी हमको सुख के रूप में ही मिलता है। इस दृष्टि से यज्ञ का एक बड़ा सुन्दर मन्त्र है–

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयं च।

अर्थात् हम जो यज्ञ करते हैं, इस यज्ञ करने का जो परिणाम, जो लाभ है, वो है–**इष्टापूर्त**। **इष्ट** और **आपूर्त** के कार्य में हमारा लगना, ये हमारा यज्ञ है। अर्थात् जो परोपकार का काम है उसको करना, जो अपनी व्यक्तिगत उन्नति, व्यक्तिगत लाभ का काम है उसे करना, जो संसार का काम है उसे करना और जो आत्मा का काम है उसे करना, ये **इष्ट** और **आपूर्त** कहलाता है। इसलिए यहाँ एक ओर तो कहा गया कि इष्ट और आपूर्त करना ही यज्ञ करना है। यज्ञ करने से मनुष्य सुखी होता है, उन्नत होता है। दूसरी ओर कहा गया–

इष्टापूर्तं मन्यमाना वरिष्ठं नान्यच्छ्रेयो वेदयन्ते प्रमूढाः।
नाकस्य पृष्ठे ते सुकृतेऽनुभूत्वेमं लोकं हीनतरं वा विशन्ति।

अर्थात् जो तुम संसार की कमाई कर रहे हो, जिसको तुम इष्ट और आपूर्त कहते हो, यह अच्छा है, लेकिन ये कमाई तुम्हारी यहीं पर समाप्त हो जाने वाली है। इसके सुख, इसके लाभ, इसका भोग तो तुम्हें इस संसार में ही मिल जाता है। लेकिन जब यहाँ से तुम जाओगे, तब तुम्हारे पास दूर जाने लायक कुछ नहीं रहेगा। तुम थोड़े साधनों को लेकर, थोड़ी दूर की ही यात्रा कर सकते हो। तुमको यदि लम्बी, दूर की यात्रा करनी है, तो फिर तुम्हें बहुत अच्छे साधन जुटाने होंगे। लेकिन जो इष्ट और आपूर्त वाले साधन हैं, ये थोड़े साधन हैं, ये छोटे साधन हैं, दूर तक की यात्रा के लिए संभव नहीं हैं। इसलिये यहाँ कहा–

इष्टापूर्तं मन्यमाना वरिष्ठं नान्यच्छ्रेयो वेदयन्ते प्रमूढाः

जो लोग इष्ट और आपूर्त को ही श्रेष्ठ और अन्तिम मान के बैठे हैं, इस संसार के सुख को ही अंतिम सुख मानकर बैठे हैं और जो दूसरे सुख के बारे में जानते–पहचानते नहीं हैं, वे मूढ़ हैं, वे नादान हैं, क्योंकि फिर वो वापस यहीं पर लौटकर आने वाले हैं। इस संसार से उनका कभी पीछा नहीं छूटने वाला है। इसलिए उनको कहा है–**प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपा**। ये नौका शिथिल बन्धन वाली है। इस नौका पर बड़े लम्बे समुद्र को पार करने की आप कल्पना नहीं कर सकते हो।

फिर कौन लोग हैं जो इसको प्राप्त कर सकते हैं? तो

कहा कि वो देवयानमार्गी हैं। कौन सा देवयान मार्ग है? तो उसके लिए पंक्ति है बड़ी सुन्दर-

वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः।
ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे।

कहता है कि जो इष्ट और आपूर्त की कर्म व्यवस्था है, ये तो संसार में आने-जाने की व्यवस्था है। ये जीने-मरने की व्यवस्था है। यहाँ सुविधा से रहने की व्यवस्था है। लेकिन संसार को छोड़कर, मुक्ति के परमधाम में जाने के लिये क्या हो? तो कहता है- **वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः**। जो वेदान्त के ज्ञान से, विज्ञान के ज्ञान से, जिन्होंने तत्त्व का अच्छी तरह से बोध कर लिया है, **संन्यासयोगात्**- जिनके अन्दर संन्यास का भाव है, जिन्होंने सारे संसार को त्याग दिया है, भली प्रकार से, समझदारी से दूर फेंक दिया है, जिनका सत्त्व शुद्ध हो गया है, जिनका मानसिक धरातल पवित्र हो गया है, वे लोग फिर इस आवागमन के चक्र में नहीं पड़ते हैं। वे इस आवागमन के चक्र से छूटकर, **ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले**- वे ब्रह्मलोक में चले जाते हैं और उस ब्रह्म लोक में कब तक रहते हैं? तो कहते हैं- **परान्तकाले** अर्थात् परान्तकाल तक। इस परान्तकाल की व्याख्या विस्तार से फिर कभी करेंगे।

ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे

अमृत को प्राप्त करते हुए सारे बन्धनों से, दुःखों से, कष्टों से, व्यथाओं से वे छूट जाते हैं, इसलिये यहाँ पर देवयान और पितृयाण मार्ग का विवेचन किया गया है। ये हमारे शास्त्र के निश्चित रूप से दो भाग हैं। एक भाग से सामान्य संसार के व्यक्तियों का जीवन कैसा चलता है, कैसा चलना चाहिए-उसका निर्धारण होता है और दूसरे से जो व्यक्ति संसार को छोड़कर उस परमधाम को प्राप्त करना चाहते हैं, उस मुक्ति को प्राप्त करना चाहते हैं। इसको समझाने के लिए यहाँ देवयान और पितृयाण दो शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

इस वेद मन्त्र में जो बात कही गई है-

परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानात्

अर्थात् यह मृत्यु का जो चक्र है, यह कब छूटेगा? इससे हम कब बच सकते हैं? यदि हम पितृयाण मार्ग को छोड़ दें, हम इस पितृयाण मार्ग को छोड़कर देवयान मार्ग को अपना लें, तो हमारी यह मृत्यु की जो विभीषिका है, मृत्यु का जो भय है, ये छूट सकता है। यह इस मन्त्र का विशेष भाव है कि मृत्यु से बचने के लिए देवयान मार्ग का अनुसरण करना होगा, देवयान मार्ग को अपनाना होगा। जो **देवयानात् इतरः** देवयान से भिन्न मार्ग है, वो मृत्यु का मार्ग है, आप उससे कभी नहीं बच सकते हैं। मन्त्र में मृत्यु की बात को कहते हुए संसार में सबसे पहले इस बात को अच्छी तरह से समझना है कि मृत्यु शरीर के रूप में तो अवश्यंभावी है। शरीर बना है तो निश्चित रूप से नष्ट होगा, चाहे वह किसी का भी है। शरीर आपको मिला है कुछ प्राप्त करने के लिए, शरीर यात्रा का साधन है, शरीर यात्रा का माध्यम है, यात्रा का लक्ष्य नहीं है, यात्रा का साध्य नहीं है। इस साध्य को समझ लें और साधन की उपयोगिता जानकर उसको छोड़ने का इन्तजाम कर लें। उस साधन की लालसा को दूर हटाकर हमारी यात्रा हम जारी रख सकें तो हमारे अन्दर से मृत्यु का भय समाप्त हो जाएगा।

जो विद्वान् लोग परोपकार बुद्धि से विद्या का विस्तार करने, सुगन्धि, पुष्टि, मधुरता रोगनाशक गुणयुक्त पदार्थों का यथायोग्य मेल, अग्नि के बीच में उनका होम कर, शुद्ध वायु, वर्षा का जल वा ओषधियों का सेवन करके शरीर को आरोग्य करते हैं वे इस संसार में अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५८

जैसे पवन सब को सुख देता हुआ सब के रहने का स्थान हो रहा है वैसे ही विद्वान् को होना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.४१

कुछ तड़प-कुछ झड़प

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

हरदेवी जी की देन और विवाह- कहीं किसी विश्वविद्यालय या भारत सरकार द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक या लेख में भारत में नारी उद्धार विषय पर यह छपा है कि श्रीमती हरदेवी ब्रह्म समाज, राजा राममोहन राय आदि से बहुत प्रभावित थी। श्रीयुत् डॉक्टर दिनेश जी यह पढ़कर चौंक गए। आप इस विषय में अपनी जानकारी का सुधार करने के लिए उक्त संस्था से पत्र-व्यवहार कर रहे हैं। आपने मुझसे भी उसके और उसके पिताश्री के बारे में विस्तृत चर्चा की। डी.ए.वी. संस्था की एक महिला प्राध्यापक को एतद्विषयक जानकारी लेने तथा पुराने पत्रों के दर्शनार्थ डी.ए.वी. के अधिकारियों ने मेरे पास भेजा।

मैं आज इस विषय में बहुत संक्षेप में लिखूंगा-

१. भारत में श्रीमती हरदेवी तथा लाला रोशनलाल का विवाह आधुनिक युग का **प्रथम विधवा विवाह** था। यह एक ऐतिहासिक घटना है। आर्यसमाज ने व देश के लेखकों ने इसको इतना उठाया ही नहीं।

२. श्रीमती हरदेवी तो आर्यसमाजी थी। ऋषि दयानन्द, पं. लेखराम आदि से सम्बन्धित होने का उल्लेख न करके उसे ब्रह्म समाज से जोड़कर रिसर्च का ढोल पीटना ज्ञान घोटाला नहीं तो क्या है? राजा राममोहन राय जी के अच्छे कार्य की प्रशंसा करना तो ठीक ही है। इसका यह अर्थ तो नहीं कि वह ब्रह्मसमाजी थीं।

३. हरदेवी के पिता श्री कन्हैयालाल इंजीनियर थे, श्री कन्हैयालाल अलखधारी कोई और थे। दोनों को एक मानना लेखकों की भूल है। दोनों कायस्थ थे। दोनों उत्तर प्रदेश से पंजाब आए। दोनों ऋषि दयानन्द के बहुत भक्त, प्रशंसक थे। अलखधारी जी लुधियाना रहते थे और हरदेवी के पिता लाहौर रहते थे। पहले पौराणिक थे या यह कहो कि सब कुछ थे। वह कवि भी थे, सिद्धहस्त लेखक व इतिहासकार थे। ऋषि का रंग चढ़ा तो बहुत बदल गए। फारसी के भी कवि थे। मैंने उनका अलभ्य साहित्य बहुत सुरक्षित किया। उनका **पंजाब का इतिहास** एक दुर्लभ प्रामाणिक ग्रन्थ है। मूलप्रति एक स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के पास थी और एक मेरे पास है। अब पटियाला विश्वविद्यालय ने अनूदित करके छपवा दी है।

४. हरदेव की एक पत्रिका का एक ही दुर्लभ अंक था जो मैंने परोपकारिणी सभा को भेंट कर दिया है।

पंडित चमूपति निष्कासन शताब्दी- यह वर्ष पंडित चमूपति के बहावलपुर स्टेट से निष्कासन का शताब्दी वर्ष है। आर्यसमाज इसे मनाता है या नहीं, यह तो समय ही बताएगा। आज नासिक के श्री आशीष से पंडित जी की एक दार्शनिक पुस्तक के सम्बन्ध में चलभाष पर विस्तृत बात की। समय मिला तो मैं **'वैदिक दर्शन पंडित चमूपति की लौह लेखनी से'** इस वर्ष में लिख दूंगा। उनकी पुस्तक **'दयानन्द आनन्द सागर'** जिसके कारण उन्हें घरबार, परिवार, संपदा छोड़नी पड़ी- मैंने कुछ वर्ष पूर्व देवनागरी में संपादित करके छपवा दी थी। अब भी प्राप्य है। उस पुस्तक का मूल्यांकन करने वाला एक ही आर्य साहित्यकार है और वह है श्री राणा प्रतापसिंह गन्नौरी। आर्यो! फिर बता दूँ, ऋषि-जीवनी के लिए एक ही आर्य को कष्ट झेलने पड़े और निष्कासित होना पड़ा।

उनकी लौह लेखनी से लिखी गई दार्शनिक पुस्तक जवाहिरे 'जावेद निजाम' हैदराबाद ने प्रतिबन्धित कर दी थी।

विकासवाद रुक क्यों गया- १. डॉ. सत्यपाल जी के डार्विनवाद पर दिए गए व्याख्यान पर सटपटाने वाले क्या यह बताने की कृपा करेंगे कि अमीबा से बन्दर और बन्दर से मनुष्य तक के विकास की रंगीन कहानियाँ सुनाने वाले श्री प्रकाश जी भाजपा मन्त्री अथवा अखिलेश सपा नेता बन्दर से मनुष्य के आगे के विकास की कथा सुनाएंगे? **मनुष्य पर पहुँचकर विकास क्यों रुक गया?**

२. भाजपाई ८४ लाख योनियों को मानते हैं। इन लाखों योनियों के क्रमिक विकास को डार्विन के आधार पर सिद्ध करें। ८४ लाख योनियों को और पुनर्जन्म को मानते हो तो फिर तो बंदर, मनुष्य, कीट, पतंग, पक्षी सब योनियाँ आरम्भ से ही ऐसे बनाई गईं।

३. प्रकाश जी! आप भारतीय संस्कृति, गीता, पुनर्जन्म की भी दुहाई देते हैं। गीता व पुनर्जन्म सिद्धान्त के अनुसार तो डार्विन भी किसी जन्म में बंदर, गाय, तोता और मछली बन सकता है। प्रकाश जी! आप तथा आपके मित्र प्रेमी आपकी सोच वाले न जाने कितनी बार विकास करते-करते बंदर आदि निचली योनियों में गए होंगे और आगे भी निचली योनियों में जा सकते हैं। या तो पुनर्जन्मवाद और गीता की दुहाई देनी बंद करो या डार्विनवाद की बांसुरी बजानी बंद करो।

४. मंत्री जी, आप स्पष्ट शब्दों में बताओ कि आप कर्मफल सिद्धान्त व पुनर्जन्म को सत्य मानते हो या डार्विन के मत को। जनता को भ्रमित मत करो। जो सत्य जानते-मानते हो, वह सबको बता दो। वोट के लिए हिंदू बन जाते हो और वैसे डार्विन के कल्पित मत के लिए वेद, शास्त्र, ऋषियों की नित्य अनादि फिलॉसफी को झुठलाने का दुस्साहस करते हो। आप भी राहुल से कुछ कम नहीं। वह गुजरात जाकर जनेऊधारी ब्राह्मण बन बैठा। चलो, उसका तो विकास हो गया, आप असत्य भाषण करके नैतिक दृष्टि से विकास कर रहे हैं या ह्रास?

५. डार्विन के मत के अनुसार जीवन का न कुछ आदर्श है और प्रयोजन। अमीबा से चलते-चलते बंदर बन गए और बंदर से मनुष्य बन गए। मनुष्य बनकर ब्रेक क्यों लग गई? अगली योनि कौनसी सामने आयेगी? मोक्ष की, योग की चर्चा जो मोदी जी ने योग को महत्त्व देकर छेड़ दी है, उसकी क्या आवश्यकता है? **मोक्ष कौन पावेगा? आत्मा का तो डार्विन अस्तित्व ही नहीं मानता। मानता होता तो मैक्सपलैनिक को क्यों इसके विरुद्ध आवाज उठानी पड़ती।** संघ प्रमुख श्री भागवत ने कुछ दिन पूर्व धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पर कुछ कहा था। आपने उन्हें सुना ही होगा। उन्हें रोक कर दिखाते। उन्हें भी उपदेश देते। डार्विन की ग्रन्थमाला लेकर श्री भागवत के कथन की व्याख्या करके दिखाओ। श्रीमान जी, माननीय सत्यपाल जी की कोटि का वैज्ञानिक और भारतीय दर्शन का अधिकारी विद्वान् तो भागवत जी के कथन की व्याख्या और पुष्टि तर्क से, प्रमाणों से कर सकता है। **आपको तो चुप्पी ही साधनी पड़ेगी।**

६. हमारे आदरणीय प्रकाश जी, आपने भारतीय विचारक व कहानीकार सुदर्शन जी की बाबा भारती की कहानी पढ़ रखी होगी। वह तो बताते हैं कि अविकसित पर्वतीय लोगों में उच्च नैतिकता का भाव है और विकसित मैदानी प्रजा में ठगी, चोरी, डाका तथा छलकपट आदि सब दोष मिलते हैं। डार्विन से पूछकर बताना यह ह्रास हो रहा है या विकास? पहले डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद, सरदार पटेल, लाल बहादुर शास्त्री, लोकमान्य तिलक और नेताजी सुभाष आदि नेता अधिक तपस्वी, त्यागी, सत्यवादी थे या आज के नेता? छाती पर हाथ रखकर बताओ यह विकास है ह्रास। कहाँ गया डार्विन का कल्पित विज्ञान?

७. मन्त्री महोदय, सामूहिक बलात्कार की घटनाएं देशभर में रुकने का नाम नहीं ले रही हैं, यह विकास हो रहा है या ह्रास? हमारा दर्शन जिसके प्रवक्ता श्री सत्यपाल हैं, यह मानता है कि सृष्टि-नियम के अनुसार चलेंगे तो विकास होगा। ईश्वर के नियम तोड़ने से ह्रास ही होगा। विकास और ह्रास का यह चक्र चलता ही रहता है।

८. हम आपसे एक बात जानना चाहेंगे कि आप थोड़ा इस बात पर प्रकाश डालें कि सत्यपाल जी के भाषण पर अपमानजनक टिप्पणी करने की प्रेरणा आपको किसने दी? गणेश उत्पत्ति विकास थी या ह्रास? डार्विन से पूछकर व्याख्या करें।

९. भारतीय विश्वविद्यालयों में और विदेशों में भी कुरान और बाइबल की फिलॉसफी पर रिसर्च होती है। नये-नये ग्रन्थ छपते हैं। पहले भारत में कुरान और बाइबल की चर्चा रोककर दिखाओ। ये दोनों ग्रन्थ आपके पूजनीय डार्विन के विकासवाद को कतई नहीं मानते। इनका आदम क्या बंदर की संतान था? वे भी सत्यपाल जी के पीछे खड़े हैं। जब सत्यपाल कुरान के प्रमाण देंगे तो अखिलेश झट से सत्यपाल जी के चरण छूकर क्षमा मांगेगा। वह वैज्ञानिक युग में डार्विन की थोथी कल्पना भूल जाएगा।

१०. अगली बार फिर यह चर्चा छेड़ेंगे। हम प्रेम से आपको सत्यासत्य के निर्णय का निमन्त्रण देते हैं। सत्ता का मद छोड़कर आओ, हम आपका पक्ष सुनेंगे। आप में दम है तो वैदिक विज्ञान का, आर्ष विचारधारा का, श्री राम और कृष्ण की मान्यता का खंडन करके दिखाना। हम

चाहेंगे कि आप अपने साथ दो-चार नहीं तो कम से कम एक तो ऐसी बंदरिया लेते आना, जो अपने पेट से दो-चार ऐसे नवजात शिशुओं को चिपकाये हुए हो जिनकी आकृति आपसे मिलती-जुलती हो अर्थात् वे शिशु बंदर से मनुष्य बन चुके हों। वे आपके सदृश दो टांगों व पैरों वाले हों। खड़े हों तो सीधे और चलें तो सीधे। उन्हें देखकर सारा पशु जगत् बोल उठेगा-

अच्छे दिन आ गए, आ गए, बंदर मनुष्य बनते प्रकाश जी ने दिखा दिए।

उपाध्याय महाप्रयाण अर्ध शताब्दी- यह वर्ष पूज्य पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय के महाप्रयाण का अर्ध शताब्दी वर्ष है। आर्यो, आप इसे कैसे मनाएंगे? श्री अजय आर्य अपने संस्थान से गंगा ज्ञान सागर के चारों भागों का तीसरा और बढ़िया परिवर्द्धित संस्करण निकालकर एक नया कीर्तिमान स्थापित करेंगे। आर्यजन हमसे कुछ नई कृति की आशा कर रहे हैं। ईश्वरेच्छा सर्वोपरि है। देखें, मैं क्या कर पाता हूँ? आर्यजनता हाथ पर हाथ धरे न बैठे। अजय जी का सहयोग करें। परोपकारी एक पठनीय विशेषाङ्क निकाल सके तो अत्युत्तम रहेगा।

डॉ बेंद्रे का पुण्य स्मरण- एक शोधकर्ता ने देश के यशस्वी कन्नड़ महाकवि डॉक्टर बेन्द्रे के बारे में कुछ पूछकर उनके पुण्य स्मरण का एक अवसर दिया। मैंने अपने नूतन ग्रन्थ स्वामी श्रद्धानन्द जीवन यात्रा में कर्नाटक की बहुत घटनाएं दी हैं। कन्नड़ महाकवि ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्तकर्ता श्री करन्थ का चित्र भी दिया है। उनके स्वामी जी के प्रति उद्‌गार भी दिए हैं। महाकवि बेन्द्रे भी कर्नाटक के थे। वह भी ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्तकर्ता थे। वह ऋषि दयानन्द और वेद के भक्त थे। दोनों विभूतियों को आर्यसमाज नहीं जानता। कर्नाटक के कुछ ही आर्य इन्हें जानते हैं।

यहाँ महाकवि बेन्द्रे जी का एक प्रसंग दिया जाता है। डॉ. धर्मवीर जी तथा मैं गुंजोटी जाने के लिए आर्यसमाज मंदिर शोलापुर से बाहर निकले तो कुछ प्रेमी सज्जनों ने हमें घेर लिया। एक ने कहा, आप जाते-जाते हमें डॉ. बेन्द्रे से अपनी भेंट के संस्मरण सुना दें।

मैंने कहा, ''आपको कैसे पता चला कि मेरी कभी उनसे भेंट हुई थी?''

उस सज्जन ने कहा, ''उनकी डायरी में आपकी कुछ चर्चा पढ़कर उनका पुत्र यहाँ समाज में आपके संस्मरण किसी ग्रन्थ में देने के लिए आया था। उसे बताया गया कि वह तो पंजाब चले गए।''

उनको संक्षेप से बताया कि यहाँ कन्नड़ के गंभीर विद्वान् स्वाध्याय प्रेमी और मेरे मित्र डॉ. दीवान जी ने एक दिन मुझे कहा, ''डॉक्टर बेन्द्रे यहाँ पधारे हैं। यदि आप देश की महान् विभूति से मिलना चाहें तो मैं आपके लिए समय माँगूँ?'' मैंने अविलम्ब उत्तर दिया, अतिशीघ्र ऐसा कीजिए।

आपने उन्हें मेरा परिचय देकर मिलने का समय मांगा तो महाकवि ने अत्यन्त उदारता से समय दे दिया। डॉ. बेन्द्रे संस्कृत, हिंदी आदि कई भाषाओं के जाने-माने विद्वान् थे। उन्हें भेंट करने के लिए पूज्य उपाध्यायजी का वेद प्रवचन, पंडित भगवद्दत्त जी का भारतीय संस्कृति का इतिहास आदि कुछ पुस्तकें लेकर उनकी सेवा में पहुँचा। पुस्तकों में ऊपर वेद प्रवचन को उठाकर वह गद्‌गद हो गए। ऋषि की वेदभाष्य शैली तथा वेद की महिमा पर बहुत कुछ कहा। मुझे तभी पता चला कि महाकवि वेद और ऋषि दयानन्द के बारे में बहुत कुछ जानते हैं। फिर पंडित भगवद्दत्त जी की पुस्तक उठा कर बोले, "Pt. Bhagavad Datta is a great son of Bharat-mata" यह सुनकर मेरी छाती अभिमान से फूल गई। मैंने इस भेंट पर सार्वदेशिक साप्ताहिक में एक लेख दिया। जिस-जिसने पढ़ा झूम उठा। विजय कुमार जी- अजय जी के पिता ने उस लेख पर विशेष बधाई दी। पंडित भगवद्दत्त जी से इस भेंट की चर्चा की तो वह बड़ी विनम्रता से बोले, ''महाकवि बेंद्रे मुझसे बहुत स्नेह करते हैं।'' आर्यसमाजी न जाने क्यों उनकी चर्चा करते ही नहीं।

जब तक सबकी रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्ष सुख से अधिक कोई सुख है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : १७ से २४ जून, २०१८

(ज्येष्ठ शुक्ल ४ से ज्येष्ठ शुक्ल ११, सम्वत् २०७५ तक)

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे– समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा– खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

स्वामी विष्वङ्ग परिव्राजक
संयोजक

ओममुनि
मन्त्री

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेलवे स्टेशन व बस स्टैण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को स्थान दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हों। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

ऐतिहासिक कलम....

आर्य संस्कृति और योग साधन

आचार्य उदयवीर शास्त्री

आर्य संस्कृति को अभिव्यक्त करने वाला जितना वाङ्मय उपलब्ध है, उसको देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि आर्य संस्कृति सदा अध्यात्मप्रवण रही है। इसका यह तात्पर्य नहीं कि अधिभूत का सर्वथा परित्याग कर दिया गया हो। संसार में जीवन बिताते यह संभव नहीं। अधिभूत को एक साधनमात्र समझकर उसका उसी स्तर पर पूर्ण उपयोग करने से कभी उपेक्षा नहीं की गई। उसका सब प्रकार से उपभोग स्वीकार्य होने पर भी आर्य संस्कृति उसकी दासता को कभी मान्यता नहीं दे सकी। अधिभूत का स्वामी बनकर रहना उसे पसन्द है, दास बनकर नहीं। अधिभूत की उपासना में भी रहस्यमय रीति से अध्यात्म को अन्तर्हित रख चमकाने का प्रयास रहा है। खजुराहो के मन्दिर इसके स्पष्ट प्रतीक हैं। प्राचीन मन्दिरों की शिल्पकला, देवताओं की परिकल्पना-सब इसी के समर्थक, प्रतीक हैं।

अध्यात्म को सार्वजनिक अभिव्यक्ति देने के लिये योग-साधनाओं की प्रक्रियाओं का उद्भावन हुआ। इनके सूत्र अतिप्राचीन हैं। मनु के एक श्लोक-सन्दर्भ से यह भाव संकेतित हुआ है-**'विविधाश्चौपनिषदीरात्मसंसिद्धये श्रुतीः'** (मनु. ६, २९) अर्थात्, एकान्त में निवास करता हुआ व्यक्ति आत्मा की पहचान के लिये छिपे रहस्यों को खोलने वाली विविध श्रुतियों का सेवन करे, उनके अर्थों व निहित भावों को गहराई से समझकर उन पर आचरण करे। इसके अनुसार योगसाधन-पद्धतियों का प्रचलन वेद के साथ हुआ। अनन्तर अनुभवी आचार्यों के द्वारा इनका विपुल विस्तार होता रहा है।

इस विषय में यजुर्वेद के ग्यारहवें अध्याय के प्रारम्भिक मन्त्र मननीय हैं। पहला मन्त्र है-

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः।
अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्याऽअध्याभरत्।।

(सविता) अध्यात्ममार्ग पर चलने वाला ऐश्वर्याभिलाषी पुरुष (प्रथमं) पहले अथवा इन्द्रिय व्यापार में फैले हुए (मनः) व्युत्थित मन को, संकल्पविकल्पात्मक अन्तःकरणवृत्ति को और (धियः) धारणात्मिका बुद्धिवृत्तियों को (युञ्जानः) समाहित करता हुआ, विविध बाह्यविषयों से हटाकर एकमात्र आत्मचिन्तन में एकाग्र करता हुआ (अग्नेः) सर्वाग्रणी सर्वज्ञ सर्वप्रकाशक प्रभु से, प्रभुकृपा से, प्रभुनामस्मरण से (ज्योतिर्निचाय्य) ज्ञान का प्रकाश निश्चयपूर्वक प्राप्त कर (पृथिव्यै) सर्वजनहित के लिये अथवा उस ज्ञान के सर्वोच्च स्तर तक विस्तार के लिये (अध्याभरत्) उसे अधिकारपूर्वक धारण करे।

योगसाधन की पद्धति और उसके प्रयोजन दोनों ही को इस मन्त्र द्वारा भलीभाँति प्रकट कर दिया गया है। वर्तमान काल में योगसाधना के उपायों व विधियों को विस्तार के साथ जिस शास्त्र में बताया गया है, वह पातञ्जल योगदर्शन है। उसका दूसरा सूत्र है-'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' चित्त की, अन्तःकरण की वृत्तियों को विषयों की ओर प्रवृत्ति से रोकना योग है। जो व्यक्ति योगमार्ग पर चलना चाहता है उसके लिये आवश्यक है कि वह अपनी चित्तवृत्तियों का निरोध करे। इसी तथ्य को प्रस्तुत वेदमन्त्र प्रकट करता है-**'प्रथमं मनः धियः युञ्जानः'** प्रथमं-प्रथित विस्तृत फैले हुए (प्रथ विस्तारे) विषयों में इधर-उधर बिखरे हुए मन और बुद्धि को समाहित करता हुआ-विविध विषयों से समेट कर एक आत्मतत्त्व में लगाता हुआ अभ्यासी योगमार्ग पर पग बढ़ाता चला जाता है।

स्वभावतः इन्द्रियां व अन्तःकरण बाह्य विषयों में प्रवृत्त रहते हैं-**''पराञ्चि खानि व्यतृणत् स्वयम्भूस्तस्मात् पराङ् पश्यति नान्तरात्मन्''** परमात्मा ने इन्द्रियां आदि समस्त करण बाहर का रुख रखने वाले बनाए हैं इसलिये इनका झुकाव-आकर्षण बाहर को ही होता है, अन्तरात्मा के स्वरूप को ये नहीं पहचान पाते। यदि इन्द्रियों-करणों का ऐसा स्वभाव, ऐसा सन्निवेश न होता तो इनको समाहित करने का उपदेश निष्प्रयोजन होता। इसीलिये मन्त्र में 'मनः' का विशेषण 'प्रथमं' दिया है।

चित्तवृत्तियों का निरोध क्यों करे? प्रयोजन बताया-

'तत्त्वाय' तत्त्वज्ञान के लिये योग करे। योग का प्रयोजन तत्त्वज्ञान है। शास्त्रकारों ने समस्त विश्व का विवेचन दो तत्त्वों के रूप में किया है, एक चेतन दूसरा अचेतन, संसार में पहला भोक्ता और दूसरा भोग्य है, परन्तु भोक्ता अपने शुद्धचेतन स्वरूप को अविवेक के कारण न पहचानता हुआ, भोग्य में ही डूबा रहता है, फंसा रहता है, दु:खी होता हुआ भी विषयरस में लिप्त होकर उसे छोड़ना नहीं चाहता। शाब्दिक रूप से यह जानता हुआ कि मैं चेतन आत्मतत्त्व हूँ, इसका साक्षात् बोध न होने से वह इसी दु:खजलधि में डूबता-उतराता रहता है। उस आत्मतत्त्व का साक्षात् बोध करने के लिये ही यह योगसाधन का मार्ग है। आत्मतत्त्व का साक्षात् बोध ही तत्त्वज्ञान है। इसी का संकेत मन्त्र में 'तत्त्वाय' पद से किया है।

यह तत्त्वज्ञान का प्रकाश उस तेजोमय ज्ञान-प्रकाशस्वरूप प्रभु की कृपा पाकर ही प्राप्त होता है, यह भाव मन्त्र के-'**अग्ने: ज्योतिर्निचाय्य**' पदों से अभिव्यक्त होता है। अग्नि से ज्योति को निश्चय से प्राप्त कर योगी स्वप्रतिष्ठ हो जाता है। तब वह पूर्ण-योगी उस परमपूत ज्ञान-प्रकाश को मानवमात्र के हित के लिये सर्वत्र फैला देने का प्रयास करता है-(**पृथिव्या अध्याभरत्**)। इन्हीं उच्च पवित्र भावनाओं से प्रेरित होकर आत्मदर्शी विवेकी महान् लोककर्त्ता पुरुषों ने अध्यात्मशास्त्रों का प्रवचन किया। यह सब लोकहित की भावना से हुआ।

आत्मप्रतिष्ठ होने के लिये उस प्रभु की कृपा को किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है, इसका विस्तृत विवरण पातञ्जल योगशास्त्र में प्रस्तुत किया गया है। उसका संक्षिप्त स्वरूप पहले समाधिपाद के सूत्र २३ से २८ तक में निर्दिष्ट है। उसका सार केवल इतना है-ईश्वर का मुख्य वाचकपद 'प्रणव' है। यह पद 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'णु-स्तुतौ' धातु से निष्पन्न है। जिस पद द्वारा प्रकृष्ट रूप से परमात्मा की स्तुति की जाय, वह 'प्रणव' है। ऐसा वह पद 'ओ३म्' है। 'नव' पद का अन्य अर्थ नवीन भी है-ईश्वर का यह नाम प्रकृष्ट रूप से सदा नया बना रहता है, कभी पुराना नहीं पड़ता। इसी कारण विवेकी आचार्यों ने इसे यह नाम दिया है। प्रभु के अन्य जितने नाम हैं, सब नैमित्तिक हैं, किसी विशेष प्रवृत्तिनिमित्त के कारण ही उन-उन नामों का प्रयोग परमेश्वर के लिये होता है। वह अजन्मा है जन्म न होने के कारण, निराकार है आकार न होने के कारण, अजर है बूढ़ा न होने के कारण, अमर है कभी न मरने के कारण, निर्विकार है कभी विकृत न होने के कारण, अन्तर्यामी है विश्व में निविष्ट होकर उसका नियन्त्रण करने के कारण आदि। तात्पर्य यह है कि परमात्मा के अन्य जितने नाम हैं, उनके पीछे कोई निमित्त है। जब उस निमित्त का परमात्मा के विषय में निर्देश करना अपेक्षित हो, तभी वह नाम सामने प्रयोग में आता है, अन्यथा पुराना होकर सुप्त-सा पड़ा रहता है, परन्तु परमात्मा का 'ओ३म्' नाम इसी कारण मुख्य है कि उसका कोई विशेष प्रवृत्तिनिमित्त नहीं है। इसी कारण वह सदा नया है, 'प्रणव' है, स्वरूपबोधक मुख्य नाम है।

योगदर्शन के इस प्रसंग में प्रभु की कृपा प्राप्त करने एवं आत्म-साक्षात्कार के लिये 'प्रणव' के जप का विधान है। वह जप अनवधान होकर नहीं करना, उसके अर्थ को अपनी भावना में, चिन्तन में निहित रखना है। प्रणव का अर्थ परमात्मतत्त्व ही है, अन्य कुछ नहीं। यदि इसको अधिक स्पष्ट करना अपेक्षित हो, तो सत्यार्थप्रकाश के प्रारम्भ में 'ओ३म्' की जो व्याख्या की गई है, प्रणव-जप के समय परमात्मा के उसी स्वरूप का निरन्तर चिन्तन-ध्यान, चित्त में बनाये रखना अपेक्षित है।

प्रणव-जप का तात्पर्य है-'ओ३म्' का निरन्तर श्वास-प्रश्वास की गति के साथ मानसिक उच्चारण, जिसमें वाक् इन्द्रिय का व्यापार नितान्त भी नहीं होना चाहिये, प्रणव की मानसिक कल्पना के साथ उसके अर्थ का निरन्तर चिन्तन करते रहना। प्रणव का वाच्य अर्थ परमात्मा है। उसके स्वरूप को अपने ध्यान से न हटने देना उसका चिन्तन है। निरन्तर व दीर्घकाल तक अभ्यास से एक आकर्षक अनुभूति का आभास होने लगता है। चित्त चाहता है कि यह स्थिति बराबर बनी रहे।

आर्यसंस्कृति में अध्यात्ममार्ग पर प्रवृत्ति के लिये योगसाधन का सदा ही बड़ा महत्त्व रहा है। इसी कारण वेद, वैदिक तथा अन्य आर्यसाहित्य में विद्या की इस विधा का जितना प्राञ्जल विवरण पाया जाता है, विश्व के अन्य किसी साहित्य में एवं अन्य संस्कृतियों में वैसा उपलब्ध नहीं है। आर्यसंस्कृति की यह एक अनुपम विशेषता है।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, अन्यथा शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। **परोपकारी पत्रिका कार्यालय से निरन्तर भेजी जाती है, फिर भी जिन लोगों के पास पत्रिका का कोई अंक प्राप्त ना हुआ हो तो कृपया पत्र या दूरभाष द्वारा हमें सूचित करें, ताकि हम वह अंक पुनः भेज सकें, साथ ही अपने डाकघर में इसकी जाँच आदि भी करें।**

धनराशि भेजने हेतु सूचना

परोपकारिणी सभा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित सभा है एवं उनके कार्यों को आगे बढ़ाने के लिय कृत-संकल्प है। सभा द्वारा ऋषि के स्वप्नानुरूप गुरुकुल, संन्यास एवं वानप्रस्थाश्रम, ध्यान शिविर, वैदिक साहित्य का प्रकाशन, देश में प्रचार, परोपकारी पत्रिका के माध्यम से जन-जागरण, भव्य अतिथिशाला, भोजनशाला आदि अनेक प्रकल्पों का संचालन हो रहा है। ये सभी कार्य आर्यजनों के सात्विक दान से ही होते हैं। अतः दानी महानुभावों से निवेदन है कि वेद, ईश्वर, दयानन्द के इस कार्य में अपना सहयोग अवश्य प्रदान करें।

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं, वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

परम-धर्म

तपेन्द्र वेदालंकार, आई. ए. एस. (सेवानिवृत्त)

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने धर्म की परिभाषाएं विभिन्न शब्दों में अपने विभिन्न ग्रन्थों में दी हैं। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखते हैं, ''जो पक्षपातरहित न्याय, सत्य का ग्रहण, असत्य का सर्वथा परित्यागरूप आचार है, उसी का नाम 'धर्म' और इससे विपरीत जो पक्षपातरहित अन्यायाचरण, सत्य का त्याग और असत्य का ग्रहणरूप कर्म है, उसी को अधर्म कहते हैं।'' पञ्चम समुल्लास में महर्षि लिखते हैं, ''धर्म तो पक्षपातरहित न्यायाचरण, सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग, वेदोक्त ईश्वर की आज्ञा पालन, परोपकार, सत्यभाषणादि लक्षण सब आश्रमों अर्थात् सब मनुष्यमात्र का एक ही है...।''

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

मनु.

सदा धैर्य्य रखना, निन्दा-स्तुति, मान-अपमान, हानि-लाभ आदि दुःखों में भी सहनशील रहना, मन को सदा धर्म में प्रवृत्त कर अधर्म से रोक देना, चोरी त्याग अर्थात् बिना आज्ञा या छल, कपट, विश्वासघात वा किसी व्यवहार वा वेद विरुद्ध उपदेश से परपदार्थ का ग्रहण न करना, राग द्वेष पक्षपात छोड़के भीतर और जल मृत्तिका मार्जन आदि से बाहर की पवित्रता रखनी, अधर्माचरणों से मन को रोक के इन्द्रियों को धर्म में ही सदा चलाना, मादक द्रव्य बुद्धिनाशक अन्य पदार्थ, दुष्टों का संग, आलस्य, प्रमाद आदि को छोड़ के श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन, सत्पुरुषों का संग, योगाभ्यास, धर्माचरण, ब्रह्मचर्य आदि शुभकर्मों से बुद्धि का बढ़ाना, पृथिवी से ले के परमेश्वरपर्यन्त यथार्थ ज्ञान और उससे यथायोग्य उपकार लेना, जैसा आत्मा में वैसा मन में, जैसा मन में वैसा वाणी में, जैसा वाणी में वैसा कर्म में वर्तना, जैसा जो पदार्थ हो उसको वैसा ही समझना, बोलना, करना, क्रोधादि दोषों को छोड़कर शान्त्यादि गुण ग्रहण करना-ये धर्म के दश लक्षण महर्षि ने मनु के आधार पर लिखे हैं।

एकादश समुल्लास में पुनः लिखते हैं, ''इसी प्रकार ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त का मत है कि वेद-विरुद्ध को न मानना किन्तु वेदानुकूल ही का आचरण करना धर्म है।'' **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में लिखते हैं**, ''...जो न्याय अर्थात् पक्षपात को छोड़के सत्य का आचरण और असत्य का परित्याग करना है, उसी को धर्म कहते हैं।'' ''मन का बल और उसकी शुद्धि करना भी धर्म का उत्तम लक्षण है।'' ''प्रातःकाल और सन्ध्याकाल में वायु और वृष्टि जल को दुर्गन्ध से छुड़ाके सुगन्धित करने से सब मनुष्यों को स्वर्ग अर्थात् सुख की प्राप्ति होती है, इसीलिए अग्निहोत्र को भी धर्म का लक्षण कहते हैं।''

स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में ऋषि लिखते हैं, **''जो पक्षपातरहित सत्यभाषणादियुक्त ईश्वराज्ञा वेदों के अविरुद्ध है उसको 'धर्म' और जो पक्षपात सहित अन्यायाचरण मिथ्याभाषणादि ईश्वराज्ञाभङ्ग वेदविरुद्ध है उसको 'अधर्म' मानता हूँ।'' आर्योद्देश्यरत्नमाला** में ऋषि लिखते हैं, ''जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन, पक्षपातरहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए एक और मानने योग्य है उसको 'धर्म' कहते हैं।'' महर्षि **गोकरुणानिधि** में लिखते हैं, ''जिस-जिस व्यवहार से दूसरों की हानि हो वह-वह अधर्म और जिस-जिस व्यवहार से उपकार हो, वह-वह 'धर्म' कहाता है।'' **व्यवहार भानु** में लिखते हैं, ''जिस-जिस कर्म के करने से अपने आत्मा को शंका, लज्जा और भय नहीं होता, वह-वह धर्म और जिस-जिस कर्म में शंकादि होते हैं, वह-वह अधर्म...।'' ''सत्य व्यवहार करने का नाम 'धर्म' और विपरीत वर्तने का नाम 'अधर्म' है।'' **न हि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्**-का अर्थ करते हैं, ''यह निश्चित है कि न सत्य से परे कोई धर्म और न असत्य से परे कोई अधर्म हैं।''

महर्षि धर्म का आधार वेद को मानते हैं तथा मानते हैं कि इसी से उत्तम सुख व निःश्रेयस् की सिद्धि होती है। धर्म के प्रत्येक लक्षण में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष-ऋषि ने

वेदज्ञान को आधार माना है तथा स्पष्ट किया है कि जो वेदों के अनुकूल है, जो वेदों के अविरुद्ध है, जो वेदोक्त है वही धर्म है, जो प्रतिकूल है, वही अधर्म है। महर्षि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में लिखते हैं, ''ईश्वर ने वेदों में मनुष्यों के लिए जिसके करने की आज्ञा दी है वही धर्म तथा जिसके करने की प्रेरणा नहीं की है, वह अधर्म कहाता है।''

आर्यजनो! धर्म की विस्तृत व्याख्या महर्षि ने की है तथा धर्म को जानने, मानने व आचरण में लाने हेतु बहुत बल दिया है। एक बार सोचें-महर्षि ने परम-धर्म किसे माना है, आर्यों के लिए परम-धर्म क्या बताया है? आर्यसमाज का तीसरा नियम कहता है, ''वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'' उन्होंने आर्यों का परम धर्म स्पष्टत: वेद का पढ़ना-पढ़ाना व सुनना-सुनाना बताया है, क्योंकि वेद को महर्षि ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं तथा उनका स्पष्ट मानना है कि, ''जो धर्म के ज्ञान की इच्छा करें वे वेद द्वारा धर्म का निश्चय करें क्योंकि धर्म-अधर्म का निश्चय बिना वेद के ठीक-ठीक नहीं हो सकता।'' (**ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका**)। महर्षि वेद को सब सत्यविद्याओं का पुस्तक मानते हुए धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य को परखने की कसौटी मानते हैं। यह निश्चित हुआ कि आर्यसमाज जिन सिद्धान्तों पर आधारित है उनका आधार वेद है। बिना वेदों के वैदिक समाज के अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती व आर्यसमाज भी बिना वेदों के आर्यसमाज नहीं रह सकता। स्पष्ट है कि वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए आर्यसमाज को वेदों की ओर बढ़ना होगा। वेदों के विषय में आधारभूत काम किया जाना आर्यसमाज की पहली प्राथमिकता है। इसी से शास्त्रीय रूप में तथा व्यावहारिक रूप में वैदिक सिद्धान्तों की स्थापना संभव हो सकती है। यदि कहा जाये जो कि आज इसी पर सबसे कम काम हो रहा है तो संभवत: अत्युक्ति न होगी। वैदिक विद्वान् अपने-अपने सामर्थ्य से वेदों पर कार्य कर रहे हैं, परन्तु वह उनका व्यक्तिगत प्रयास है जिससे समाज लाभान्वित हो रहा है। अब ये विद्वान् भी स्मृतिशेष होते जा रहे हैं। यदि गिनती की जावे तो गम्भीर विद्वानों की संख्या बहुत कम रह गयी है। वह पीढ़ी जो महर्षि की शिक्षा-विधि अनुसार पढ़ी थी-उसकी तुलना आज का एम.ए. संस्कृत, वेद, दर्शन कर नहीं सकता। अत: समय की माँग है कि आर्य संस्थाएं आगे आवें तथा वेद व वेद सम्बन्धी शोध आदि के लिए और अधिक गम्भीर प्रयास किये जावें।

आर्यसमाज के तीसरे नियम में महर्षि ने वेदों के बारे में किये जाने वाले कार्य की दिशा भी तय कर दी है-पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना। बड़ा स्पष्ट है कि वेद को पढ़ने-पढ़ाने का उद्यम किया जावे, गम्भीर विद्वान् तैयार किये जावें, उसके लिए अनुकूल वातावरण हो, अनुकूल आर्थिक स्थिति हो। जो मूर्धन्य विद्वान् हमारे बीच हैं, उनकी अध्यक्षता में शोध-पीठें बनायी जावें, उनको योग्य शोधार्थी दिये जावें जिससे वे विद्वान् अपना सारा ज्ञान उन विद्यार्थी-शोधार्थियों पर उड़ेल सकें तथा मूर्धन्य विद्वानों की विद्या उनके साथ जाने से बच जावे। आर्य संस्थाएं विद्वानों से विचार करके कुछ विषयों का चयन करें तथा उन विषयों पर शोध किये जावें।

'सुनना-सुनाना' उद्देश्य के लिए-क्या सुनना है तथा क्या सुनाना है इसकी प्राथमिकता का निर्धारण विद्वमण्डली से कराया जावे। उन विधाओं-माध्यमों की खोज की जावे जिनसे सुनना व सुनाना ज्यादा प्रभावी हो। उन समूह-जनसमूहों की पहचान की जावे जिन्हें सुनना है या जिन्हें सुनाना है। यह भी देखा जावे कि उन्हें प्राथमिकता से क्या सुनाना है। आर्यों को अपना परमधर्म निभाना है, वेद के पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने में व्यवस्थित एवं पुरजोर प्रयास करना होगा। वर्तमान प्रयास श्लाघनीय हैं, परन्तु वे अन्तिम नहीं हो सकते। इसके लिए सार्वदेशिक व प्रतिनिधि सभाओं, गुरुकुल काँगड़ी आदि सक्षम संस्थाओं को पीठों की स्थापना करनी होगी। परोपकारिणी सभा को भी अपने कार्य को धार देनी होगी। पुस्तकों के छापने-छपाने व वितरण विक्रय के प्रबन्ध के लिए भी आर्य संस्थाओं को आगे आना होगा। कुछ संस्थाएं मुद्रण का कार्य कर रही हैं, प्राइवेट पब्लिशर्स भी मुद्रण का कार्य कर रहे हैं जो प्रशंसनीय है, परन्तु पर्याप्त तो नहीं माना जा सकता। आज इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों का युग है, उस पर ध्यान देने की जरूरत है, परन्तु आज भी

पुस्तक पढ़ने वालों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है अत: इलेक्ट्रॉनिक साधनों के साथ-साथ प्रिन्टिड मैटीरियल पर ध्यान देने की भी उतनी ही आवश्यकता है। आर्यसमाजी तथा जो आर्यसमाजी नहीं हैं-उनके उपयोग के लिए वेदों के सम्बन्ध में, विविधता एवं तर्कपूर्ण शैली में, सामान्य सरल भाषा में हृदयगम्य साहित्य की आज आवश्यकता है जिससे आर्यों के सत्यासत्य सम्बन्धी विचार दृढ़ हों, धर्म पर चलने की प्रेरणा तथा धर्म का सही ज्ञान हो। आर्येतरों को भी वेद सरल लगें, वे उन्हें पढ़ने के लिए, जानने के लिए प्रेरित हों तथा जाने या अनजाने धर्म का पालन करना प्रारम्भ कर दें व धीरे-धीरे संस्कार दृढ़ होकर वे वैदिक सिद्धान्तों के अनुयायी हो जावें, धर्म पर उनकी श्रद्धा हो जावे।

कुछ विश्वविद्यालयों में दयानन्द पीठ स्थापित हैं, कुछ में आर्यजनों द्वारा बनाये जाने की माँग की जाती रही है। उन पीठों में कार्य होना तथा नई पीठें बनाया जाना सही है। उनमें वैदिक विचारधारा के विद्वान् ही लगें यह उससे भी ज्यादा जरूरी है नहीं तो अर्थ का अनर्थ होने का डर रहेगा, परन्तु सार्वदेशिक व प्रतिनिधि सभाओं आदि समर्थ संस्थाओं में वेद, वेदांग पीठ बनाकर उनमें विद्वानों की नियुक्ति कर गहरा-गम्भीर काम होना अपरिहार्य लगता है। इससे पूर्व में किये गये-विभिन्न संस्थाओं में हुए तत्सम्बन्धी शोधों की सूचना का एकत्रीकरण भी होगा तथा विद्वानों की सलाह अनुसार जो विषय शेष हैं या जिन पर कार्य करना समुचित है-उन पर कार्य भी होगा। राजस्थान के एक विश्वविद्यालय में ऐसी कई अलग-अलग धर्मों से सम्बन्धित पीठें स्थापित हैं। मैंने कुछ समय इस विश्वविद्यालय के कुलपति पद पर कार्य किया था। मेरा अनुभव है कि यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक विद्वान् को उसकी बड़ी आयु में घर छोड़कर अन्य कहीं रहने के लिए बाध्य किया जावे। यह हो सकता है कि जो अपने निवास-स्थान पर रहकर ही कार्य करना चाहते हैं, वे कहीं रहकर कार्य करें तथा शोधार्थी वहीं पर अध्ययन करें। पढ़ाने व पढ़ने वाले विद्वानों को उचित सुविधा व पारिश्रमिक दिया जावे। मुख्य कार्य शोध होना है उसे ही प्राथमिकता होनी चाहिये, कहाँ बैठकर हो रहा है यह मायने नहीं रखता। आर्यसमाज में अधिकतर संस्थाओं में निर्माण कार्य पर्याप्त हो चुके हैं। अत: पीठों के नाम पर भवन बनाना प्राथमिकता नहीं होनी चाहिये अपितु ठोस कार्य होना चाहिये जिससे ऋषि का स्वप्न पूरा किया जा सके।

महर्षि लिखते हैं, ''विद्वानों की शिक्षा और वेद पढ़े बिना केवल स्वाभाविक ज्ञान से किसी मनुष्य का निर्वाह नहीं हो सकता।'' वेदनित्यत्वविचार में लिखते हैं, ''किञ्च परमेश्वर के बनाये वेदों के पढ़ने, विचारने और उसी के अनुग्रह से मनुष्यों को यथाशक्ति विद्या का बोध होता है, अन्यथा नहीं।'' अत: महर्षि द्वारा बनाये आर्यसमाज के तीसरे नियम की पालना करना सभी आर्यों का कर्त्तव्य है। वेद के पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने के परमधर्म के पालन में पुरुषार्थ करना सभी आर्यों के लिए ऋषि का आदेश है। ऋषि के आदेश की पालना तो करनी ही चाहिये-इसमें विकल्प नहीं हो सकता।

कर्त्तव्यमाचरन् कार्यमकर्त्तव्यमनाचरन्।
तिष्ठति प्रकृताचारे स वा आर्य इति स्मृत:।।

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. २३ से ३० मई, २०१८ - **आर्यवीर दल शिविर,** सम्पर्क- ०९४६००१६५९०

२. ०५ से १२ जून, २०१८ - **आर्य वीराङ्गना शिविर,** सम्पर्क- ०९४६००१६५९०

३. १७ से २४ जून, २०१८- **योग-साधना शिविर,** सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

४. १६, १७, १८ नवम्बर २०१८- **ऋषि मेला,** सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित नये संस्करण

१. वेदपथ के पथिक (आचार्य धर्मवीर स्मृति ग्रन्थ)

पृष्ठ संख्या-२६४

मूल्य-रु. २००/-(आधे मूल्य पर उपलब्ध)

परोपकारिणी सभा के यशस्वी प्रधान डॉ. धर्मवीर जी का जीवन सत्य के लिये संघर्षपूर्ण रहा है। विषम परिस्थितियों में भी उन्होंने ईश्वर, वेद और धर्म को अपने जीवन से तनिक भी अलग नहीं होने दिया और यही विशेषता रही, जिसके कारण वे एक आदर्श आचार्य, आदर्श नेता, आदर्श लेखक, आदर्श सम्पादक एवं आदर्श उपदेशक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। उनके जीवन की कही-अनकही घटनाएँ हमें भी प्रेरणा दें, इस दृष्टि से ये ग्रन्थ अवश्य पठनीय है। जिन्होंने डॉ. धर्मवीर जी को निकट से देखा है, जो उनके जीवन की घटनाओं के साक्षी रहे हैं, उनके संस्मरण इस कर्मयोगी के जीवन की बारीकियों को उजागर करते हैं। ग्रन्थ के प्रारम्भ में चित्रों के माध्यम से भी उनके जीवन की कुछ झलकियों को दर्शाया गया है।

२. महर्षि दयानन्द सरस्वती के कुछ हस्तलिखित पत्र-

पृष्ठ संख्या-३३६ **मूल्य**-रु. २००/-

महर्षि दयानन्द, उनके उद्देश्यों, कार्यों, योजनाओं एवं व्यक्तित्व को समझने में उनके द्वारा लिखे पत्र उतने ही उपयोगी हैं, जितना कि उनका जीवन-चरित्र। ये पत्र महर्षि के हस्तलिखित हैं। पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें मूल-पत्रों की प्रतिलिपि दी गई है और साथ ही वह पत्र टाइप करके भी दिया गया है। यह पुस्तक विद्वानों के दीर्घकालीन पुरुषार्थ का फल है। जनसामान्य इससे लाभ ले-यही आशा है।

३. अंग्रेज जीत रहा है-

लेखक - प्रो. धर्मवीर

पृष्ठ संख्या-२२२ **मूल्य**-रु. १५०/-

इस पुस्तक में डॉ. धर्मवीर जी के 'भाषा और शिक्षा' विषय पर लिखे गये ४२ सम्पादकीयों का संकलन किया गया है। 'परोपकारी' पत्रिका में लिखे गये इन सम्पादकीयों को पुस्तक रूप में प्रकाशित करने की माँग समय-समय पर उठती रही है। अत: पुस्तक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। डॉ. धर्मवीर जी का चिन्तन बेजोड़ था। वे जिस विषय पर जो भी लिखते वह अद्वितीय हो जाता था। उनके अन्य सम्पादकीयों का प्रकाशन भी प्रक्रिया में है। पुस्तक का आवरण व साज-सज्जा अत्याकर्षक है।

४. स्तुता मया वरदा वेदमाता-

लेखक - प्रो. धर्मवीर

पृष्ठ संख्या-१३५ **मूल्य**-रु. १००/-

वेद ईश्वर प्रदत्त आचार संहिता है। वेद की आज्ञा ईश्वर की आज्ञा है और वही धर्म है, इसलिये मानव मात्र की समस्त समस्याओं का समाधान वेद में होना ही चाहिये। वेद के कुछ ऐसे ही सूक्तों की सरल सुबोध व्याख्या ही इस पुस्तक में की गई है। पुस्तक की भाषा इतनी सरल है कि नये-से नये पाठक को भी सहज ही आकर्षित कर लेती है। व्याख्याता लेखक आचार्य डॉ. धर्मवीर जी के गहन आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक चिन्तन व अनुभवों के परिणामरूप यह पुस्तक है।

५. इतिहास बोल पड़ा–

लेखक – प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

पृष्ठ संख्या–१५९ **मूल्य**–रु. १००/–

इस पुस्तक में इतिहास की परतों से कुछ दुर्लभ तथ्य निकालकर दिये गये हैं, जो कि आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती के गौरव का बखान करते हैं। पुस्तक के लेखक प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु हैं। ऋषि के समय में देश–विदेश से छपने वाले पत्र–पत्रिकाओं के उद्धरण इस पुस्तक में दिये गये हैं।

६. बेताल फिर डाल पर

लेखक – प्रो. धर्मवीर

पृष्ठ संख्या–१०४ **मूल्य**–रु. ६०/–

डॉ. धर्मवीर जी की हॉलैण्ड एवं अमेरिका यात्रा का विवरण एवं अनुभव इस पुस्तक में है। विदेश में आर्यसमाज की स्थिति, कार्यशैली, वहाँ की परिस्थितियाँ एवं विशेषताओं को यह पुस्तक उजागर करती है। यायावर प्रवृत्ति के विद्वान् आचार्य धर्मवीर जी की यह पुस्तक एक प्रचारक के जीवन पर भी प्रकाश डालती है।

७. लोकोत्तर धर्मवीर–

लेखक – तपेन्द्र वेदालंकार,

पृष्ठ संख्या–४४ **मूल्य**–रु. २०/–

तपेन्द्र वेदालंकार (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.) ने इस पुस्तक में डॉ. धर्मवीर जी के जीवन की कुछ ऐसी घटनाओं पर प्रकाश डाला है, जिनसे धर्मवीर जी के महान् लक्ष्यों व तदनुरूप कार्यशैली का पता चलता है। इस लघु पुस्तक से प्रेरणा लेकर प्रत्येक आर्य ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के उद्देश्यों को पूर्ण करने में उत्साहित हो–यही आशा है।

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु

खाता धारक का नाम – **वैदिक पुस्तकालय, अजमेर।**

बैंक का नाम – **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या – **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

अतिथि–यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि–यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

निरन्तर पथ का पथिक आर्य धर्मवीर।

मोहनलाल तँवर

भीतरी तूफान था पर ऊपरी खामोश था
रोशनी का था मसीहा और दिल में जोश था

डॉ. धर्मवीर! आप पर ये पंक्तियाँ उपयुक्त बैठती हैं। यह धर्मपथ का पथिक निरन्तर चलता रहा, चाहे बर्फ पड़ता रहा या आसमां जलता रहा। ना रात देखी ना सुबह ना शाम ना मौसम का प्रकोप, जिन दिशाओं से धर्म की ध्वनि सुनाई दी, उसी दिशा में चल पड़ा मात्र वो और उसका आत्मविश्वास। अविद्या, अज्ञान के विरुद्ध ये शख्स तर्कों के तीर, ज्ञान का गाण्डीव, वेद का साहस, परमात्मा का विश्वास और सत्य का तूणीर लेकर चल पड़ा, परन्तु किसी के दिल को जख्म नहीं दिये, बल्कि जख्मों पर सान्त्वना का मरहम लगाया। अन्य धर्मवालों को भी उनके विचारों से सहमत होते हमने देखा है।

गहन अध्ययन, गहन चिन्तन और व्यापक मनन के उपरान्त जो मेधाशक्ति उसने प्राप्त की, उसका किंचित् मात्र भी उसने प्रदर्शन नहीं किया, हमें बेशक उनकी विद्वत्ता पर गर्व था, परन्तु हमारी गर्वोक्ति भी उस व्यक्ति को विचलित नहीं करती थी, क्योंकि वह निन्दा-स्तुति से बहुत ऊपर था। उनको कटु शब्द कहे गये, मुकदमे चलाये गये, आलोचनायें की गईं, परन्तु वो शख्स अग्नि में से प्रहलाद की तरह निकल जाता था और विरोधी हिरण्यकश्यप देखते ही रह जाते थे।

सिद्धान्तों पर दृढ़तापूर्वक चलने वाला वह ऐसा पथिक था कि उसने रास्ते के व्यवधानों को ठोकर पर रखा, प्रोफेसर की नौकरी त्याग दी, भूखा रहा, सस्ती से सस्ती सब्जियाँ उबालकर पेट की क्षुधा शान्त की, परन्तु असत्य से समझौता नहीं किया। इस ईश्वर भक्त को सहधर्मिणी भी उसी के स्तर की मिली, जिसने इस दु:ख की घड़ी में साथ दिया, तीन पुत्रियों को अभावों का अनुभव नहीं होने दिया और अजमेर के श्रेष्ठ विद्यालयों में उनको शिक्षा दिलाई। आज तीनों पुत्रियाँ गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी माता-पिता के आदर्शों का पालन कर रही हैं और अपने परिवारों को भी वैदिक अनुयायी बना रही हैं।

परमात्मा ने न जाने किन पदार्थों से इस व्यक्ति को बनाया था, क्योंकि जिस शरीर को हम पाँच तत्त्वों का पुतला कहते हैं वो तो जरा कष्ट पड़ते ही विचलित हो जाता है, इसकी आत्मा में तो प्रभु ऐसा विराजमान था कि इसने विकट से विकट कष्ट में आह तक नहीं की।

धार्मिक विद्वान् प्राय: शुष्क स्वभाव के होते हैं, परन्तु इनका हास्य-व्यंग्य उच्चकोटि का था और किसी को चोट पहुंचाने वाला भी नहीं था। मुस्कान का तो उनके साथ चोली-दामन का साथ था, कभी भी उनके होठों से मुस्कान गायब नहीं हुई। कभी क्रोध भी आता तो पानी पर लकीर जैसा होता था, जो एक क्षण में ही तिरोहित हो जाता था। धार्मिक कट्टरता उनको छू कर भी नहीं गई थी, परन्तु वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध कभी समझौता नहीं किया तथा समय-समय पर ईसाई और मुस्लिम विद्वानों के यज्ञशाला में प्रवचन भी करवाये।

महर्षि दयानन्द के जहाँ अवशेष डाले गये थे, वह ऋषि उद्यान एकदम बेरौनक था। मात्र एक सरस्वती भवन, एक टीन की यज्ञशाला थी तथा एक टीन की चद्दर के नीचे चार-पाँच गायें बंधी रहती थीं। आपने जब परोपकारिणी सभा के महत्त्वपूर्ण पदों को ग्रहण किया तदुपरान्त चार मंजिल की विशाल बिल्डिंग अनुसन्धान भवन के नाम से बनी तथा साधकों, वानप्रस्थियों व संन्यासियों को सुविधानुसार रहने के वास्ते लेखराम भवन, ओमानन्द भवन आदि भवनों का निर्माण हुआ और एक बहुत ही सुन्दर यज्ञशाला तथा आधुनिक सुविधाओं से युक्त गौशाला का निर्माण हुआ। वैदिक सिद्धान्तों को लेकर महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल की स्थापना आपके द्वारा ही हुई। जहाँ कई ब्रह्मचारी तैयार होकर विभिन्न स्थानों पर आर्य सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

चिकित्सा सुविधायें उपलब्ध करवाने हेतु एक कुशल वैद्य की देखरेख में डिस्पेंसरी निर्मित की तथा इतनी सुन्दर भोजनशाला का निर्माण करवाया जहाँ सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालु एक साथ बैठकर भोजन कर सकें। महर्षि के

बलिदान समारोह को भव्य रूप से आयोजित किया तथा वेदगोष्ठी के नाम से विभिन्न विषयों पर विद्वानों के विचारों को प्रसारित किया तथा सभी का यथायोग्य सम्मान किया।

वर्ष में दो-तीन साधना, स्वाध्याय शिविरों का आयोजन आपकी योजना का ही एक भाग था, जहाँ वर्ष भर में हजारों साधक आकर योग-प्राणायाम का प्रेक्टिकल ज्ञान, दर्शनों एवं उपनिषदों का पठन-पाठन करते हैं तथा चरित्र निर्माण एवं स्वस्थ जीवन हेतु नवयुवक-युवतियों का आर्य वीर-वीरांगना शिविर लगाकर उनमें अच्छे संस्कार डाले जाते हैं।

आपके अन्तिम संस्कार में जहाँ बाहर से आये आर्य एवं स्थानीय आर्यों के अतिरिक्त आम व्यक्तियों का समूह भी व्यथित दिखाई पड़ रहा था और हमने ऐसे व्यक्तियों को रोते हुए देखा जिनकी विकट से विकट घड़ी में भी आँखों से अश्रु नहीं आते थे। जीवन को क्षणभंगुर समझने वाले मनीषी भी गीली आँखें लिए आपकी अन्तिम जीवन यात्रा में सम्मिलित थे। विरोधी भी आपके गुणों का बखान कर रहे थे, समर्थकों का तो हाल ही मत पूछो। संस्था के शरीर में से एक आत्मा का बर्हिगमन हो गया हो, ऐसा प्रतीत होता था। अन्त्येष्टि में वैदिक मन्त्रों के साथ लोगों के गले से आहें भी प्रस्फुटित हो रहीं थीं। आपकी देह को पंचतत्त्व में विलीन कर लोग ऐसे लौट रहे थे मानों अपना सर्वस्व अग्नि को समर्पित करके आ रहे हों।

आपके लिए यह श्लोक खरा उतरता है, जिसका अर्थ है-नीति-निपुणों की निन्दा करो अथवा स्तुति करो। उनको धन प्राप्त हो अथवा नष्ट हो जाये, आज मरें अथवा दीर्घ आयु प्राप्त करें, परन्तु न्याय के पथ से ऐसे विद्वान्, मनीषी, महान् व्यक्ति विचलित नहीं होते।

प्रभु, आप जहाँ भी हैं अपनी आस्तिकता, धार्मिकता व सिद्धान्तों के साथ रहें, यदि मुक्ति प्राप्त होती है तो प्रभु में विलीन होकर आनन्द का भोग दो अरब वर्ष तक करते रहें।

वो भी उस युग की हस्ती थे
यह भी इस युग की हस्ती थे
फर्क इतना था, दयानन्द ब्रह्मचारी थे,
धर्मवीर गृहस्थी थे।

एक आहुति
अपने आचार्य के लिए.....

ऋषि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा की तन, मन, धन से सेवा करने वाले, उसे अपनी मातृवत् समझने वाले और यहाँ तक कि अपना जीवन समर्पित कर देने वाले डॉ. धर्मवीर आज अपना समस्त भार आर्य जनता अर्थात् अपने उत्तराधिकारियों पर छोड़ गये हैं। उन्होंने ऋषि के स्वप्नों को अपना कर्त्तव्य समझकर सभा को गगनचुंबी ऊँचाइयों तक पहुँचाया। अनेक नये प्रकल्प चलाये यथा-वैदिक गुरुकुल, गौशाला, आश्रम, अतिथियों के ठहरने व खान-पान की नि:शुल्क व्यवस्था आदि। उन्होंने जो-जो कार्य छेड़े उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति में कभी न्यूनता न आने दी। परोपकारिणी सभा ऐसे पुत्र को प्राप्त कर गौरव का अनुभव करती है और बिछुड़कर शोकग्रस्त होने का भी। उनके द्वारा शुरु किये कार्य कभी शिथिल न पड़ें, इस कारण **सभा ने डॉ. धर्मवीर जी की स्मृति में एक करोड़ रु. की स्थिर निधि बनाने का संकल्प लिया है,** जिससे कि धन धर्म के काम आ सके। इसमें सन्देह नहीं कि ये समस्त कार्य आर्य जनता के सहयोग से ही प्रारम्भ हो सके हैं और सहयोग से ही चल भी रहे हैं। इसलिये इसमें भी सन्देह नहीं कि सभा के इस संकल्प को आर्य जनता शीघ्र पूर्णता की ओर पहुँचा देगी और शायद उससे भी कहीं बढ़कर। यज्ञ तो हवि माँगता है। बिना हवि के यज्ञ की कल्पना भी क्या? बस देरी तो सूचित होने की है। हवि बनना तो आर्यों के खून में है, तन से, मन से अथवा धन से।

आप अपना दान चैक, ड्राफ्ट या सभा के खाते में सीधे भी भेज सकते हैं। कृपया, राशि भेजने के पश्चात् सभा में दूरभाष या पत्र द्वारा अवश्य सूचित कर दें।

- मन्त्री

मन्त्र-ब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्

वेदमार्तण्ड डॉ. महावीर मीमांसक

१९,२० व २१ जनवरी २०१८ को जोधपुर में महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति न्यास, जोधपुर एवं जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में ऋग्वेदीय वेद सङ्गोष्ठी का आयोजन किया गया। मुझे भी गोष्ठी में भाग लेने के लिये आमन्त्रित कर लिया गया। संगोष्ठी का विषय था, **''ऋग्वेदीय इन्द्र देवताक सूक्त मीमांसा।''** मैंने अपने शोधपत्र वाचन में इन्द्र देवता के सभी स्वरूपों का वैदिक प्रमाणों का विस्तृत उद्धृण देते प्रो. डी.एन. झा, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा सन् २००१ में अंग्रेजी में हिन्दुस्तान टाइम्स में लिखे उनके लेख ''Paradax of Indian Cows'' की खूब धज्जियां उड़ाईं जिसमें उन्होंने लिखा था कि इन्द्र देवता, गौ, बैल आदि का मांस खाता था। श्रोताओं ने मेरे लेख की खूब तालियां बजाकर प्रशंसा की।

अगले अर्थात् अन्तिम दिन २१ जनवरी को आचार्या विदुषी नन्दिता जी ने अपना शोध-पत्र पढ़ा **''मन्त्र ब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्''** विषय पर। गोष्ठी क्योंकि जोधपुर विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित की गई थी अतः भारत भर के सभी वर्गों के विद्वान् आये हुये थे, पौराणिक पद्धति के विद्वान् विशेष रूप से उपस्थित थे, जिनमें दिल्ली से लालबहादुर संस्कृत संस्थान के डॉ. प्रो. महानन्द झा और जम्मू कश्मीर से प्रो. हरिनारायण तिवारी तथा द्वारका (गुजरात) से प्रो. जयप्रकाश नारायण द्विवेदी विशेष उल्लेखनीय हैं। समग्रे गोष्ठी के अध्यक्ष आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश और विशिष्ट सान्निध्य डॉ. वेदपाल (मेरठ) थे। अन्य भी अनेक मूर्धन्य विद्वान् गोष्ठी में उपस्थित थे।

आदरणीय विदुषी आचार्या नन्दिता जी ने अपने विषय को सप्रमाण विस्तार से प्रतिपादित करते हुये सिद्ध किया कि **ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं हैं** और अन्त में उठते हुये बड़े धीमे स्वर में यह तर्क देकर अपना वक्तव्य समाप्त करके चली गईं कि ब्राह्मणग्रन्थ ईश्वरकृत न होने से वेद नहीं हो सकते। आचार्या नन्दिता जी के इस तर्क को पौराणिक पण्डित प्रो. महानन्द और प्रो. हरिनारायण तिवारी ने न्यायदर्शन की पञ्चावयवी प्रक्रिया के आधार पर सिद्ध करने के लिये चैलेञ्ज कर दिया। प्रो. हरिनारायण तिवारी ने तो यहाँ तक कह दिया कि ये तीन जन्म में भी इसे सिद्ध नहीं कर सकतीं जिस पर प्रो. जयप्रकाश नारायण द्विवेदी ने अपने पक्ष को अजेय होने के हर्ष में खूब तालियां बजाईं।

खैर! पटल (मंच) पर दृश्य बदला और आर्य विद्वानों के बोलने की बारी आई। सर्वप्रथम लेखक (डॉ. महावीर मीमांसक) ने ही मोर्चा सम्भाला और पौराणिक विद्वानों के चैलञ्ज को स्वीकार करते हुये सिंहनाद करते हुये ललकारा। पहले तो लेखक व वक्ता ने वैदिक और शास्त्रीय प्रमाण प्रस्तुत किये कि ब्राह्मणग्रन्थ वेद नहीं हैं। उदाहरणार्थ कुछ निम्न प्रमाण प्रस्तुत किये-

१-**''मन्त्र ब्राह्मणयोर्वेद नामधेयम्''** यह कात्यायन का वचन है किसी वैदिक वाङ्मय का वचन नहीं है। कात्यायन ने अपनी कर्मकाण्डीय प्रक्रिया में ब्राह्मणग्रन्थों का उपयोग करने के लिये यह वचन बनाया था। अतः यह कोई प्रामाणिक वचन नहीं है, अपनी प्रक्रिया को चलाने के लिये यह कात्यायनीय तकनीकी वचन है।

२-वैदिक कर्मकाण्ड का प्रामाणिक वैदिक दर्शन जैमिनि ऋषि का **पूर्वमीमांसा दर्शन** है, जिसमें वेद (मन्त्र) और ब्राह्मण की पृथक्-पृथक् स्पष्ट परिभाषा दे रखी है।

(क) मन्त्र वेद की परिभाषा है **''तच्चोदकेषु मन्त्राख्या''** (पू. मी. २.१.३२) अर्थात् मन्त्र (वेद) वह कहलाते हैं जो किसी कर्म का विधान करते हैं। और

(ख) ब्राह्मण की परिभाषा है **''शेषे ब्राह्मण शब्दः''** (पू. मी. २.१.३३) अर्थात् मन्त्रों (वेद) के अतिरिक्त जो नाम है वह ब्राह्मण ग्रन्थ कहलाते हैं।

यदि मन्त्र (वेद) और ब्राह्मण एक ही होते तो जैमिनि ऋषि को अपने पूर्व मीमांसादर्शन में इनकी अलग-अलग एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न परिभाषा देने की आवश्यकता नहीं थी।

मन्त्र ही वेद है इसका प्रमाण आचार्य यास्क ने अपने **निरुक्त शास्त्र** में देते हुये लिखा

साक्षात्कृत्धर्माऋषयो बभूवुः।

तेभ्यऽसाक्षात् धर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रादुः।

यहाँ मन्त्रों (वेदों) का उपदेश साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों ने उत्तरवर्ती विद्वानों को दिया, यह स्पष्ट लिखा है। अतः मन्त्र (वेद) और ब्राह्मण ग्रन्थ सर्वथा भिन्न-भिन्न हैं, ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं है।

३-ब्राह्मण ग्रन्थ वेदों के व्याख्यान ग्रन्थ हैं, वेद नहीं है। चारों वेदों के चार ब्राह्मण ग्रन्थ अलग-अलग हैं। ऋग्वेद का ब्राह्मण ऐतरेय, यजुर्वेद का ब्राह्मण शतपथ, अथर्ववेद का ब्राह्मण गोपथ और सामवेद का ब्राह्मण।

४-इन चारों ब्राह्मणों में प्रत्येक वेद के मन्त्र के प्रतीक को समक्ष रखकर उस मन्त्र की व्याख्या की गई है, स्वतन्त्र मन्त्र कोई नहीं है। कोई भी पौराणिक पण्डित दिखला दे कि इन ब्राह्मण ग्रन्थों में अपने-अपने वेद मन्त्रों के प्रतीक लेकर उनकी व्याख्या करने के अतिरिक्त स्वतन्त्र मन्त्र है? अतः ब्राह्मण वेद मन्त्रों के व्याख्या ग्रन्थ हैं, स्वतन्त्र वेद नहीं है।

५-पाणिनी की अष्टाध्यायी का सूत्र-छन्दो ब्राह्मणानि च तद् विषयाणी भी छन्द-अर्थात् वेद को ब्राह्मण ग्रन्थों से भिन्न मानता है। यदि वेद (छन्द) और ब्राह्मण एक ही होते तो दोनों का पृथक्-पृथक् उल्लेख नहीं करता। (अष्टा. सू. ४.२.६६)

इस प्रकार के अनेक शास्त्रीय प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध करने के पश्चात् कि ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं है अपितु वेदों के व्याख्या ग्रन्थ हैं, पौराणिक पण्डितों के इस चैलेञ्ज कर उत्तर देने की बारी थी कि न्याय दर्शन की पञ्चावयवी प्रक्रिया के अनुसार न्यायदर्शन की भाषा में ही यह सिद्ध किया जाये कि ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं हैं।

पौराणिक पण्डितों के इस चैलेञ्ज को क्योंकि हमने ही (लेखक ने) सिंह गर्जना करते हुये ललकार कर स्वीकार किया था अतः अब उसका उत्तर देने की बारी थी। श्रोता लोग भी इसी प्रतीक्षा में थे कि न्यायदर्शन की भाषा में वक्ता (लेखक) इसका कैसे, क्या उत्तर देते हैं?

हमने (लेखक ने) इसका उत्तर जो न्यायदर्शन की भाषा में दिया, पाठकों की जानकारी के लिये उसे प्रस्तुत करता हूँ।

न्यायदर्शन की पञ्चावयवी प्रक्रिया-

न्यायदर्शन में निर्णयार्थ प्रयुक्त पञ्चावयव निम्न हैं,

प्रतिज्ञा-हेतुदारहणीपनय निगमनान्यवयवाः।।

न्याय-(१.१.३२)

१-प्रतिज्ञा-ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं है।

२-हेतु- मनुष्यकृत होने के कारण वेद ईश्वरकृत हैं, मनुष्यकृत नहीं हैं, क्योंकि वेद मनुष्यकृत न होकर ईश्वरकृत होने के कारण वेद हैं। जो ग्रन्थ अनीश्वरकृत (मनुष्यकृत) हैं, वे वेद नहीं हैं।

३- उदाहरण- यथा कालिदास आदि मनुष्यकृत अभिज्ञानशकुन्तल आदि। अथवा यथा तुलसी द्वारा कृत रामचरितमानस (मनुष्यकृत होने से वेद नहीं हैं।)

४-उपनय- इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण याज्ञवल्क्य कृत (मनुष्यकृत) हैं, ऐतरेय ब्राह्मण महीदास (मनुष्य) कृत है। वैसे ही अन्य ब्राह्मण ग्रन्थ भी मनुष्य कृत है, ईश्वरकृत नहीं है।

५-निगमन- इसलिये ब्राह्मणग्रन्थ वेद नहीं हैं।

इस प्रकार न्यायदर्शन की पञ्चावयवी प्रक्रिया से न्यायदर्शन की भाषा से यह सिद्ध है कि ब्राह्मणग्रन्थ वेद नहीं हैं।

मेरे बाद (लेखक के बाद) डॉ. वेदपाल जी बोले। उन्होंने भी अपने तरीके से सिद्ध किया कि ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं है।

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य, उत्तम शिक्षा, विद्या, शरीर और आत्मा का बल, आरोग्य, पुरुषार्थ, ऐश्वर्य, सज्जनों का संग, आलस्य का त्याग, यम-नियम और उत्तम सहाय्य के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१

जब तक मनुष्य सुख-दुःख, हानि और लाभ की व्यवस्था में परस्पर अपने आत्मा के तुल्य दूसरे को न जानते तब तक पूर्ण सुख को प्राप्त नहीं होते, इससे मनुष्य लोग श्रेष्ठ व्यवहार ही किया करें। **- महर्षि दयानन्द, यजु.,भा ५.४०**

शङ्का समाधान - २२

डॉ. वेदपाल, मेरठ

शङ्का- आजकल व्यक्ति, महापुरुषों, संस्था के जन्मदिन, जयन्ती, विवाह दिन, मृत्यु दिन, प्रतिवर्ष तीज त्यौहार मनाते हैं। प्राचीनकाल में ऐसा देखने को नहीं मिलता आदि-आदि। क्या इस विषय में ऐतिहासिक व महर्षि अभिमत प्रमाण हैं?

वृद्धिचन्द्र गुप्त, जयपुर

समाधान- आपके विस्तृत शङ्कात्मक लेख का सार शङ्का के रूप में यहाँ उद्धृत कर दिया गया है। व्यक्ति के द्वारा क्रियमाण कर्मों को नित्य, नैमित्तिक एवं काम्य इस रूप में विभक्त कर समझना सुगम रहेगा। **नित्यकर्म** वह कर्म हैं, जो व्यक्ति के द्वारा प्रतिदिन किए जाने चाहिए। इन कर्मों का ऐहिक प्रयोजन स्वल्प है, किन्तु आमुष्यिक प्रयोजन अतिमहत्त्वपूर्ण है। यथा-सन्ध्या, अग्निहोत्र आदि। ये वैयक्तिक तथा लौकिक प्रयोजन के स्वल्प होने पर भी पारमार्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।

नैमित्तिक कर्म- किसी निमित्त को दृष्टिगत रखकर किए जाने वाले कर्म नैमित्तिक हैं, क्योंकि निमित्त के न रहने पर इन कर्मों का आयोजन नहीं होता है। एतद्विषयक परिभाषा है- ''निमित्तापाये नैमित्तिकस्यापायः''। संस्कार तथा संस्कारों के अवसर पर होने वाले यज्ञ आदि भी नित्य न होकर नैमित्तिक ही कहलाते हैं।

काम्य कर्म-व्यक्ति द्वारा किन्हीं विशिष्ट कामनाओं (जैसे पुत्र की कामना से पुत्रेष्टि, वर्षा की कामना से वर्षेष्टि आदि यज्ञ विशेष) को दृष्टिगत रखकर किए जाने वाले कर्म हैं। इनमें विभिन्न प्रकार के लौकिक कर्म-आयोजन के साथ कामना पूर्त्यर्थ किए जाने वाले यज्ञ आदि भी परिगणित किए जा सकते हैं। इस प्रकार यदि आप देखें, तब तीनों अवसरों (नित्य, निमित्त [नैमित्तिक], कामना) पर होने वाले यज्ञ भी पृथक्-पृथक् हैं।

जन्मदिन आदि मनाने का ऐतिहासिक व महर्षि प्रतिपादित प्रमाण विषयक आपका प्रश्न इस रूप में देखा जाना चाहिए कि उसका शास्त्र अथवा महर्षि मन्तव्यों से विरोध अथवा अविरोध किस रूप में है? जन्मदिन, किसी संस्था का स्थापना दिवस, उसकी रजत, स्वर्ण आदि जयन्ती, व्यक्ति की वैवाहिक वर्षगांठ तथा मरण दिवस-बलिदान दिवस जिसे कभी शहीदी दिवस कहा जाता है को मनाए जाने का प्रयोजन क्या है?

सामान्यतः जन्मदिन, संस्था का स्थापना दिवस, उसकी रजत, स्वर्ण आदि जयन्ती का अवसर-इनके मनाने का प्रयोजन यदि एक क्षण के लिए ठहरकर यह अवलोकन करना है कि जीवन अथवा संस्था के उद्देश्य पूर्ति की दशा में किए जाने वाले प्रयत्न क्या ठीक प्रकार किए जा रहे हैं अथवा न्यूनता है? इत्यादि के विचारपूर्वक किए जाने वाले आयोजन का निश्चय ही शास्त्र से अविरोध है, भले ही शास्त्रकारों ने इसका विधान न किया हो। इसी प्रकार किसी बलिदान (गुरु तेगबहादुर, बन्दा बैरागी, महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम आदि-आदि) को स्मरण करना उसी विशिष्ट तिथि को सम्भव है। यदि कोई कुल, समाज अथवा राष्ट्र ऐसे अवसर पर किन्हीं प्रेरक घटनाओं का स्मरण कर उन महापुरुषों के द्वारा प्रतिपादित मार्ग पर चलने का संकल्प ले और विगत वर्ष का अवलोकन कर प्रेरणा ग्रहण करता है, तब इसे भी शास्त्राविरोधी मानना चाहिए, किन्तु किसी मरणदिन के अवसर पर उस मृतात्मा के नाम पर श्राद्धादि कर्म निश्चय ही शास्त्र-विरोधी होंगे।

आपकी अन्तिम शङ्का तीज-त्यौहार के सन्दर्भ में यह विवेच्य है कि शास्त्र पर्व का विधान करते हैं। पर्व के स्थान पर ही त्यौहार शब्द का प्रयोग है। तीज शब्द तृतीया तिथि का वाचक है। हिन्दुओं के (पौराणिक जगत् के) पर्व संवत्सर प्रारम्भ के बाद हरयाली तीज-श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया से प्रारम्भ होते हैं। अतः त्यौहार से पूर्व तीज शब्द का प्रयोग प्रारम्भ हुआ होगा, किन्तु इस तृतीया (तीज) का पर्व शास्त्रविहित नहीं है। हाँ, वैदिक संस्कृति में विहित पर्व (पर्व अभिप्राय है जोड़, सन्धि इसलिए शुक्ल एवं कृष्ण पक्ष के सन्धि-पर्व दिन अमावस्या एवं पूर्णिमा हैं।) अर्थात् अमावस्या-पूर्णिमा के दिन मनाने का विधान है। दर्शपौर्णमासेष्टि के साथ चातुर्मास्येष्टि सभी पर्व इन दिनों में ही सम्पन्न होते हैं। आजकल रक्षाबन्धन के नाम से प्रसिद्ध श्रावणी उपाकर्म श्रावण पूर्णिमा के दिन ही होता है। इन पर्व-दिन में शास्त्र इष्टि (यज्ञ) का विधान करते हैं।

श्रौत सूत्रों के पश्चवर्ती काल (गृह्यसूत्रों) में अष्टका भी विहित हैं। महर्षि दयानन्द श्रावणी आदि चातुर्मास्येष्टि के साथ दर्शपौर्णमास के समर्थक हैं। राम-कृष्ण के जन्म की तिथियां उल्लिखित हैं, किन्तु याज्ञवल्क्य, मनु आदि की अज्ञात हैं। इस सन्दर्भ में ऐतिहासिक परिस्थितियां भी कम उत्तरदायी नहीं हैं। गुरुवर विरजानन्द दण्डी के जीवन संघर्ष पर विचार करें, तो स्पष्ट होगा कि उनकी जन्मतिथि आदि स्मरण करने वाला कौन था?

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का महाप्रयाण

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज को आर्यसमाज के आरम्भिक काल के अस्सी वर्षों के इतिहास में सबसे अधिक समय तक समाज-सेवा करने का गौरव प्राप्त हुआ। आपका जीवन बड़ा संघर्षशील रहा। महर्षि दयानन्द जी के पश्चात् धर्म-प्रचार, संगठन और धर्म- रक्षा के लिये तीन विभूतियों ने अद्वितीय तप, त्याग और संघर्ष किया। ये तीन बलिदानी महापुरुष थे- १. पं. लेखराम जी, २. स्वामी श्रद्धानन्द जी, ३. तथा पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज।

आज इस लेख में स्वामी जी महाराज की सतत साधना तथा संघर्ष के इतिहास पर मुझे कुछ नहीं लिखना। ३ अप्रैल सन् १९५५ में आर्यसमाज के गौ-रक्षा आन्दोलन का नेतृत्व करते हुये श्री स्वामीजी ने ६ बजे सायं तक भक्तों से धर्मवार्ता, सामाजिक चर्चा की, फिर मौन होकर प्यारे प्रभु के ध्यान में लीन होकर मुम्बई में शान्तिपूर्वक नश्वर देह का परित्याग कर दिया। इस लेख में केवल उनके परित्याग विषयक प्रेरक, रोचक, आध्यात्मिक और अत्यन्त प्रेरक प्रसंग ही दिये जायेंगे।

जब भी स्वामी जी पर आर्य सज्जन लेख देते हैं तो केवल उनके साहस, शूरता, वीरता, निडरता तथा सङ्कटों से जूझने के प्रसंग ही दिये जाते हैं। इससे उनके जीवन के अन्य-अन्य सब पक्ष दब जाते हैं यथा विद्वत्ता, अटल ईश्वर-विश्वास, नियमपालन, वेदनिष्ठ, योग- साधना, शास्त्रार्थ, जप-तप, यम-नियमों की सिद्धि की कोई चर्चा ही नहीं करता। देश के स्वराज्य संग्राम में भी उनके योगदान की यथार्थ चर्चा किस आर्यसमाजी ने किसी पुस्तक व लेख में की है?

पं. लेखराम जी ने जैसे ऋषि-जीवन की सामग्री की खोज में ग्राम-ग्राम, नगर-नगर की यात्रायें कीं, इस लेखक ने भी पं. लेखराम के चरणचिह्नों पर चलते हुए देशभर में असंख्य व्यक्तियों से मिलकर स्वामी जी के जीवन के प्रत्येक पक्ष की प्रामाणिक सामग्री खोजकर लौह पुरुष ग्रन्थ में दी।

मृत्यु का आभास- आज मुझे केवल महाराज के महाप्रयाण पर ही कुछ विशेष लिखना है। श्री स्वामी जी को अपनी मृत्यु का बहुत पहले आभास हो चुका था। आपकी अन्तिम वर्ष की डायरी में मृत्यु विषयक आभास का एक स्वप्न लिखा मिलता है। मैंने उसे बड़े ध्यान से पढ़ा और जीवनी में दे दिया। मौत की कल्पना करके ही मनुष्य भयभीत हो जाता है। महापुरुषों के जप, तप, स्वाध्याय, साधना व नैतिकता की कसौटी अन्तिम वेला ही होती है। हमें अभिमान है- हमें अभिमान है कि हमारे पूज्य स्वामी इस कसौटी पर खरे उतरे। मौत से भयभीत होने का कोई प्रश्न ही नहीं था। उन्हें पता था मौत अब आने वाली है। वह यथापूर्व अकम्प व अडोल रहे।

महाशय कृष्ण जी ने सुनाया था- १ मई सन् १९५५ को श्री पं. रामचन्द्र जी के संन्यास धारण करने पर श्री महाशय कृष्ण जी भी दीनानगर पधारे थे तब आपने एक महत्त्वपूर्ण घटना सुनाई थी जो मुझे रह-रहकर याद आती है, परन्तु आर्यसमाजी इसे सुनाते ही नहीं। दिल्ली में स्वामी सत्यानन्द जी (श्रीमद्दयानन्दप्रकाश वाले) स्वामी जी के स्वास्थ्य का पता करने आये तो स्वामी जी से कहा, ''स्वामी जी आप ठीक हो जायेंगे।''

स्वामी जी लेटे हुये थे। यह सुनकर तत्काल उठकर बैठ गये और कहा, ''स्वामी यदि ठीक न हुआ तो क्या होगा? मौत ही होगी न? भय किस बात का?'' मृत्युञ्जय यतिराट का आत्मा मृत्यु को जीत चुका था। इस विषय की सब घटनायें मैं यहाँ नहीं दे सकता। पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी ने अन्तिम वेला में कुछ ऐसे ही शब्द कहे तो पूज्यपाद स्वामी जी ने कहा, ''अब तो रैफरी ने आउट कर दिया है। अब महाप्रयाण होगा ही।'' कोई ऋषि मुनि ही दृढ़तापूर्वक अपनी मृत्यु की ऐसे चर्चा कर सकता है।

मृत्यु की पहली बार चर्चा कब की?- श्री पं. नरेन्द्र जी ने एक बार हैदराबाद में और फिर लातूर अथवा किसी समाज के उत्सव पर मुझे यह घटना सुनाई थी कि सन् १९५३ के आर्य महासम्मेलन में पूज्य स्वामी जी जब

हैदराबाद पहुंचे तो स्टेशन पर उन्हें कोई लेने ही न पहुँचा। वे पैदल समाज मन्दिर पहुँच गये। उन्हें साधुओं के लिये रक्षित एक सामान्य कमरे में किसी ने ठहरा दिया। पं. नरेन्द्र जी पता लगते ही स्वामी जी के पास पहुँच गये।

स्वामी जी पण्डित जी को 'मुंशी' या 'मौलवी' कहा करते थे। बोले ''मुंशी तू कहता ही रहता है कि मठ में दीनानगर आयेगा। एक बार तो आ जा। अब इस शरीर का क्या पता कब छूट जाये?'' मेरी जानकारी व खोज के अनुसार स्वामी ने अपनी मृत्यु के आभास की पहली बार सन् १९५३ में हैदराबाद में पं. नरेन्द्र जी से ही चर्चा की।

पं. हरिदेव जी से कहा- देहली में अपने शिष्य पं. हरिदेव जी करोल बाग के एक प्रश्न का उत्तर देते हुये कहा था कि हजरत मुहम्मद के इस कथन की ''ज्यों-ज्यों मनुष्य बूढ़ा होता है उसकी धन की व जीने की लालसा बढ़ती जाती है।'' के संबन्ध में मैं क्या कहूँ? यह हजरत मुहम्मद ही जानें। अपने मन में न पहले धन की लालसा थी और न अब है। न पहले जीने की लालसा थी और न अब। ईश्वरेच्छा अपने लिये सर्वोपरि है। मृत्यु से क्या डरना?

आर्य पुरुषों को अपने महात्माओं के जीवन के ऐसे प्रसंग मुखरित करने चाहिये।

व्याकरण एवं दर्शन के अध्ययन हेतु प्रवेश प्रारम्भ

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी **परोपकारिणी सभा के द्वारा 'महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल' ऋषि उद्यान, अजमेर** में पिछले १८ वर्षों से प्रारम्भिक संस्कृत ज्ञान, पाणिनीय व्याकरण और दर्शनों के अध्ययन-अध्यापन का कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। अत: व्याकरण एवं दर्शन पढ़ने के इच्छुक विद्यार्थी प्रवेश ले सकेंगे।

इस काल में ऋषि उद्यान में प्रतिदिन यज्ञोपरान्त उपदेश व प्रवचन का लाभ भी प्राप्त हो सकेगा। समय-समय पर विविध विषयों पर विद्वानों द्वारा कक्षायें भी होती रहेंगी। ब्रह्मचारियों के लिए निवास और भोजन व्यवस्था नि:शुल्क रहेगी। प्रवेश लेने वाले ब्रह्मचारियों के लिए निम्नलिखित बातें ध्यान देने योग्य हैं-

- आयु न्यूनतम १६ वर्ष हो।
- न्यूनतम १०वीं कक्षा पढ़े हुए विद्यार्थी प्रवेश ले सकेंगे।
- गुरुकुल के अनुशासन का पालन करना अनिवार्य होगा।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

स्वामी विष्वङ् परिव्राजक - ९४१४००३७५६

समय- ९:००-१०:००प्रात:, १२:३०-१:३० मध्याह्न

पता- महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.) ३०५००१

परोपकारिणी सभा के नये सदस्य निर्वाचित

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सम्वत् २०७५ तदनुसार १८ मार्च २०१८ को हुए परोपकारिणी सभा के साधारण अधिवेशन में नये सदस्य के रूप में डॉ. वेदप्रकाश 'विद्यार्थी' को चुना गया। डॉ. वेदप्रकाश 'विद्यार्थी' केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली में सहायक निदेशक पद पर सेवाएँ देते रहे हैं। वर्तमान में आप सेवानिवृत्त होकर अपना समय आर्यसमाज के कार्य में देते हैं। 'विद्यार्थी' जी स्वाध्यायशील विद्वान् हैं। उनके ज्ञान, विद्वत्ता आदि का पूर्ण लाभ सभा व समाज को मिलेगा। शुभकामनाओं के साथ।

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एकमात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्णरूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोधकर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों में भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ मार्च २०१८ तक)

१. हरसहाय सिंह आर्य, बरेली, २. विजय शर्मा, फरीदाबाद ३. श्रीमती उषा आर्य, गुरुग्राम ४. श्रीमती तारावती सैनी, यमुनानगर ५. श्री देवमुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर ६. श्री वेदप्रकाश बरनवाल, गाजियाबाद ७. श्रीमती कंचन गहलोत व श्री विजय सिंह गहलोत, ऋषि उद्यान, अजमेर ८. श्री रामदेव प्रसाद आर्य, नोएडा ९. कु. सुनीता, दीसा १०. श्री रमेश मुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर ११. श्री दीपक तोषनीवाल, ब्यावर, अजमेर १२. डॉ. किशोर काबरा, ऋषि उद्यान, अजमेर १३. श्री डॉ. राजेश पसरीचा, जालन्धर १४. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर १५. मै. जैनिथ एन्टरप्राइजेज, दिल्ली १६. श्री वृद्धिचन्द गुप्त, जयपुर १७. श्रीमती शोभा व श्री शिवदास बाहेती, अजमेर १८. श्री लक्ष्मण मुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर १९. श्री देवेन्द्र सिंह तोमर, ऊधमसिंह नगर २०. अंजलि आनन्द, ऋषि उद्यान, अजमेर २१. सुश्री राजबाला, ऋषि उद्यान, अजमेर २२. श्री विजय कुमार शर्मा, अजमेर २३. श्री अनुज गौड, जयपुर २४. श्रीमती शान्ति शास्त्री व श्री श्रद्धानन्द शास्त्री, अजमेर २५. श्री अमित माहेश्वरी व श्रीमती सुमन माहेश्वरी, ठाणे २६. श्री रामसिंह वर्मा, ऊधमसिंह नगर २७. श्री धर्मेन्द्र सिंह, उधमसिंह नगर २८. श्री मोहनलाल गंगवार, ऋषि उद्यान, अजमेर २९. श्री प्रशान्त कुमार, नई दिल्ली ३०. श्री यशपाल गुप्ता व श्रीमती रेणु गुप्ता, दिल्ली ३१. श्री रंजन हांडा, दिल्ली ३२. श्री अवनीश कपूर, दिल्ली।

परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गोभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ मार्च २०१८ तक)

१. श्री विजय शर्मा, फरीदाबाद २. श्री विकास चौधरी, झज्जर ३. श्री योगेश शर्मा, करनाल ४. श्री मनोज कपूर, जालन्धर ५. डॉ. किशोर काबरा, ऋषि उद्यान, अजमेर ६. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर ७. श्री वृद्धिचन्द गुप्त, जयपुर ८. श्रीमती मैना देवी, अजमेर ९. श्री राजेन्द्र सिंह राठौड़, अजमेर १०. श्री अजय सहगल, डलहौजी ११. श्री विजय सिंह गहलोत व श्रीमती कंचन गहलोत, ऋषि उद्यान, अजमेर १२. श्री एस.के. गोयल, अजमेर १३. श्री पुरुषोत्तम, रियाबाड़ी, नागौर १४. श्री नन्दकिशोर सोनी, अजमेर १५. श्री जितेन्द्र कुमार, रेवाड़ी १६. श्री अनुज गौड़, जयपुर १७. श्रीमती भगवती देवी, ग्वालियर १८. श्री प्रेमनाथ गौड़, ग्वालियर १९. श्री सुरेश चन्द नवाल, अजमेर २०. कै. चन्द्रप्रकाश त्यागी व श्रीमती कमलेश त्यागी, रुड़की, हरिद्वार।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सबको उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

शिवभक्त जानें ज्योतिर्लिंगों का सच

आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा

जगत् में ईश्वर, जीव, प्रकृति ३ अनादि सत्ताएँ हैं, यह विख्यात है। यह ख्याति=प्रसिद्धि वेदादि शास्त्रों से सम्पुष्ट एवं सुप्रमाणित है। इनमें ईश्वर जीव का उपास्य है, जीव उपासक है, भोक्ता है एवं प्रकृति भोग्य है, भोग की साधन है, यह भी वेदादि शास्त्रों का सत्य सार है।

स्वस्ति दाता शिव ईश्वर- इस उपास्य ईश्वर के जिस प्रकार अनेक गुण, कर्म, स्वभाव हैं, वैसे ही इस ईश्वर के अनेक अभिधान (नाम) भी हैं। यह ईश्वर जहाँ महेश्वर, शम्भू, प्रभु, विभु, विष्णु आदि नामों से कहा जाता है, वहीं वह जगत्पिता, जगदाधार, शिव आदि भी कहा जाता है। ईश्वर के ये विशेषण **'आकुमारं यशः पाणिनेः'** के सदृश सभी के मन मस्तिष्क में समाहित हैं। सभी इस जगदाधार ईश्वर से ही स्वस्ति, अविनाश, कल्याण की कामना करते हैं, वह ही इन्हें देता है। वेद में कहा है-

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्ते।।

ऋ. १/८९/५।।

अर्थात् **वयम्**=हम, **तम्**=उस, **ईशानम्**=समस्त सृष्टि के स्रष्टा, ज्ञान-प्रदाता ईश्वर को, **जगतः**=जंगम, चलायमान, **तस्थुषः**=स्थावर जगत् के, **पतिम्**=स्वमी ईश्वर को, **धियं जिन्वम्**=बुद्धि, विवेक को बढ़ाने वाले ईश्वर को (जिवि प्रीणनार्थाः), **अवसे**= रक्षा हेतु, **हूमहे**= स्तुति का केन्द्र बनाते हैं, आहूत करते हैं, **यथा**=जिससे, **पूषा**=पोषक परमेश्वर, **नः**=हमारे, **वेदसाम्**=विद्यादि धनों का, **असत्**=देने वाला होवे, **वृधे**=वृद्धि के लिए, **रक्षिता**=रक्षा करने वाला, **पायुः**=पालन करने वाला, **अदब्धः**=हिंसारहित, **स्वस्तये**=कल्याण के लिए होवे।

मन्त्र से स्पष्ट है कि ईश्वर चराचर सम्पूर्ण जगत् का **पतिः**=स्वामी, आधार, आश्रय है। ईश्वर ही सभी पदार्थ व स्वस्ति=कल्याण का प्रदाता है।

एक ईश्वर अनेक स्वरूप-जगदाधार ईश्वर एक है, सर्वव्यापक, निराकार, अजर, अमर, नित्य आदि स्वरूपवाला है। उपनिषद् का वचन है-

य एकोऽवर्णो बहुधा शक्तियोगाद्वर्णाननेकान्निहितार्थो दधाति।
वि चैति चान्ते विश्वमादौ स देवः स नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु।। श्वेताश्वतर उपनिषद ४ / १।।

अर्थात् **यः**=जो, **एकः**= अद्वितीय, **अवर्णः**= रंग, रूपरहित, निराकार, **बहुधा**= बहुत प्रकार से, **शक्तियोगात्**= सामर्थ्यों द्वारा, **अनेकान् वर्णान्**= अनेक रंग, रूप की आकृतियों को, **निहितार्थ**=प्रयोजन सिद्ध करने के लिए, **दधाति**=पुष्ट करता है, बनाता है, **च**= और, **अन्ते**= प्रलयकाल में, **विश्वम्**= सब जगत् को, **वि एति**= संगृहीत करता है, समेटता है, **च**= और, **आदौ**=सृष्टि के आदि में, **सः देवः**= वह ईश्वर ही विद्यमान रहता है, **सः**=वह ईश्वर, **नः**= हमको, **शुभया बुद्ध्या**=शुभ बुद्धि से, **संयुनक्तु**=संयुक्त करे।

उपनिषद् वचन में ईश्वर के निराकार, अद्वितीय स्वरूप का प्रतिपादन है।

शिव ईश्वर-यही निराकार, अद्वितीय, सर्वपोषक, धारक, ईश्वर, शिवः=कल्याणकारी कहा जाता है। मन्त्र है-

सजूर्देवेभिरपां नपातं सखायं कृध्वं शिवो नो अस्तु।।

ऋ. ७/३४/१५।।

अर्थात् **सजूः**= सभी पदार्थों में विद्यमान ईश्वर, **देवेभिः**= दिव्य सामर्थ्यों से, **अपां नपातम्**= व्यापक, न टूटने वाली, **सखायम्**=हमारी मित्रता को, **कृध्वम्**=कर देवे, **नः**=हमारे लिए, **शिवः अस्तु**=कल्याणकारी होवे।

मन्त्र में शिवः पद ईश्वर के लिए आया है। यह शिव ईश्वर जगत् के विभिन्न पदार्थ, बल, बुद्धि, सुख, शान्ति आदि प्रदान कर, हमारे लिये शिवः=कल्याण प्रदान करता है। वेद-ज्ञान द्वारा अज्ञान नष्ट करता है, सूर्य, चन्द्र आदि भौतिक प्रकाश वाले पदार्थों द्वारा अन्धकार को दूर कर प्रकाश से युक्त करता है।

शिव का अतिरञ्जित रूप शिवलिंगोपासना

सुख शान्ति की अभिकांक्षा में अनुरक्त इस लोक में

इस कल्याणकारी शिव ईश्वर की अति मान्यता व पूज्यता है। खेद की बात है! लोक की अति मान्यता व पूज्यता ने वेद, उपनिषद् आदि में निर्दिष्ट निराकार, कल्याणकारी शिव का स्वरूप ही बदल दिया। निराकार को साकार बना दिया, एक रात्रि ही अर्पण कर दी है, जो महाशिवरात्रि कही जाती है। इस रात्रि का मास फाल्गुन है, पक्ष कृष्ण व तिथि चतुर्दशी है। लोक विज्ञात इस शिव व शिवरात्रि पर्व के अतिरञ्जित अनेक महत्त्व पुराण व पुराणानुकूल ग्रन्थों में वर्णित हैं, उनमें ही साकार बनाये गये शिव की लिंगोपासना का भी प्रतिपादन है। इतना ही नहीं, शिव के लिंग ज्योतिर्लिंग कहे जाते हैं।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी महत्त्व-

शिव के नाम समर्पित महाशिवरात्रि पर्व के लोक में अनेक महत्त्व चर्चित हैं। यथा-

१. पौराणिक कोश के अनुसार प्रलय के पश्चात् ब्रह्मा ने सृष्टि के आरम्भ में रुद्ररूपी शिव को फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को उत्पन्न किया।

२. शिवशंकर ने फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को तांडव नृत्य किया। अपने डमरू के निनाद से वायुमण्डल में ज्ञान, विज्ञान को भर दिया।

३. वायु एवं स्कन्ध पुराण के अनुसार फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को शिव पार्वती का शुभ विवाह हुआ।

शिवलिंग=ज्योतिर्लिंग उत्पत्ति-

लोक में जो शिवलिंग ज्योतिर्लिंग कहे जाते हैं, उनकी भी प्रतिष्ठा कम नहीं है। जैसे महाशिवरात्रि के अनेक महत्त्व चर्चित हैं, वैसे ही शिवलिंग=ज्योतिर्लिंग के भी अनेक कथोपकथन हैं। यथा-

१. पौराणिक कोश के मतानुसार ब्रह्मा ने सृष्टि के आरम्भ में अपने भौहों से एक देवता उत्पन्न किया, जिसका नाम रुद्र था। वह रुद्र अज, एकपाद्, अहिर्बुध्न्य, पिनाकी, उपराजित, त्र्यम्बक, महेश्वर, वृषाकपि, शम्भु, हरण एवं ईश्वर इन ११ प्रकारों वाला था। यह रुद्र ही शिव कहा गया। इस रुद्र के लिंग और योनि दो रूप हैं, ये रूप पुरुष व स्त्री स्वरूप हैं। शिव के ये रूप सृष्टि को बनाते व नष्ट करते हैं, अतएव शिव को महादेव कहा जाता है। (पौराणिक कोश, पृ. ४४७, मत्स्य पु. ४/५, वायु पु. अ. ३०।।)

२. पुराणों में ज्योतिर्लिंग के उत्पत्ति विषयक अनेक कथानक हैं। यथा- विष्णु की नाभि से ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई। उत्पत्ति होने पर ब्रह्मा और विष्णु में झगड़ा हो गया, झगड़े के निर्णयार्थ एक ज्योतिर्लिंग हुआ, वह ज्योतिर्लिंग ज्वाला से परिपूर्ण आदि, अन्त, मध्य से रहित था। ब्रह्मा ने कहा मुझे ज्योतिर्लिंग का अन्त ज्ञात है, मेरे ज्ञान का गवाह केतकी का फूल है। इस बहस में विष्णु बोले मुझे तो इसके आदि का ज्ञान नहीं। विष्णु के इस सत्य कथन से विष्णु बड़े कहलाये, ब्रह्मा छोटे।

३. ईशान संहिता के अनुसार ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि को हुआ। वहाँ कहा है-

शिवलिंगतयोद्भूतः कोटिसूर्यसमप्रभः।

अर्थात् कोटि सूर्यों की प्रभा के समान शिवलिंग रूप से ज्योतिर्लिंग प्रकट हुआ, अतः यह महाशिवरात्रि है। पौराणिक कोश,पृ. ४९५

४. पद्म पुराण का मानना है कि भृगु मुनि के शाप के कारण शिवशंकर की मूर्त्ति लिंग रूप हुई। पद्म पुराण के अनुसार भृगु मुनि ने यह शाप तब दिया, **जब देव कौन हो**-इस निश्चय के लिए ऋषिगण उनके गृह पर पहुँचे थे और शिवशंकर से मिलना चाहते थे, पर शिव के वाहन नन्दी ने मिलने नहीं दिया, क्योंकि उस समय शिव पार्वती के साथ एकान्तवास में थे। ऋषियों के, विशेषतः भृगु के कोप का परिणाम यह शिवलिंग है।

५. शिव पुराण में वर्णित दारुवन की अश्लील कथानुसार एक बार देवताओं की पत्नियाँ वन में वसन्तोत्सव मना रहीं थीं, उन्हें देख शंकर भोग विलास की मनीषा से नग्न होकर तांडव नृत्य करने लगे। तब देवताओं की पत्नियों के मध्य विद्यमान लक्ष्मी जी ने अपने पति विष्णु जी से शंकर के तांडव नृत्य की शिकायत की। शिकायत सुनकर विष्णु जी ने अपने सुदर्शन चक्र से शिवलिंग के टुकड़े-टुकड़े कर दिये, वे टुकड़े जहाँ-जहाँ गिरे, वहाँ-वहाँ ज्योतिर्लिंग मन्दिर बन गये।

विडम्बना-

यह भी बड़ी विडम्बना है कि आज तो बिना ही टुकड़ों के यत्र तत्र, सर्वत्र शिवलिंग वाले शिवमन्दिर बनते जा रहे हैं।

१२ ज्योतिर्लिंगों के स्थान व नाम-

शिवपुराण के अनुसार शिवलिंग ज्योतिर्लिंग कहे जाते हैं। इन ज्योतिर्लिंगों की संख्या १२ है। ज्योतिर्लिंग १२ स्थानों पर प्रतिष्ठित हैं। उनके स्थान व नाम इस प्रकार हैं-

१. गुजरात पाटण, प्रभास स्थित-**सोमनाथ।**

२. कृष्णा नदी के समीप श्रीशैल, आन्ध्र स्थित-**मल्लिकार्जुन।**

३. उज्जैन मध्यप्रदेश स्थित-**महाकाल**

४. नर्मदा तट मान्धाता ग्राम, उज्जैन मध्यप्रदेश स्थित-**ओंकार या अम्बेश्वर।**

५. देवघर, झारखण्ड स्थित-**वैद्यनाथ।**

६. पुणे निकट, डाकिनी, महाराष्ट्र स्थित-**भीमेश्वर या भीमशंकर।**

७.सेतु निकट, तमिलनाडु स्थित-**रामेश्वर।**

८. द्वारिका, गुजरात स्थित-**नागेश्वर या नागनाथ।**

९. वाराणसी स्थित-**विश्वेश्वर या विश्वनाथ।**

१०. गोदावरी तट स्थित-**त्र्यम्बकेश्वर।**

११. हिमालय, उत्तरांचल स्थित-**केदारेश्वर।**

१२. एलोरा निकट, औरंगाबाद स्थित-**घृष्णेश्वर या घुश्मेश्वर।**

पुराणोक्त उपासना के २ विभाग-

पुराणोक्त शिव की उपासना के २ विभाग हैं। एक वह विभाग है जिसमें हस्त, पादयुक्त प्रतिकृति है, दूसरा विभाग वह है, जो हस्त पाद रहित लिंग रूप है। इस लिंग रूप की ही उपासना की जाती है।

शिवलिंगोपासना के प्रामाण्य के लिए ऋग्वेद के मन्त्रों का भी सहारा लिया जाता है। वे मन्त्र हैं-

न यातव इन्द्र जूजुवुर्नो न वन्दना शविष्ठ वेद्याभिः।
स शर्धदर्यो विष्णुस्य जन्तोर्मा शिश्नदेवा अपि गुर्ऋतं नः।।

ऋ. ७/२१/५।।

स वाजं यातापदुष्पदा यन्त्स्वर्षाता परि षदत्सनिष्यन्।
अनर्वा यच्छतदुरस्य वेदो घ्नज्छिश्नदेवाँ अभि वर्पसा भूत्।।

ऋ. १०/९९/३।।

इन वेदमन्त्रों की भाँति उपनिषदों को भी शिवलिंगोपासना के प्रमाण में उपस्थापित किया जाता है। वे स्थल हैं-

यो योनिं योनिमधितिष्ठत्येको यस्मिन्निदं सं च वि चैति सर्वम्।
तमीशानं वरदं देवमीड्ये निचाय्येमां शान्तिमत्यन्तमेति।।

श्वेताश्वतर उप. ४/११।।

यो योनिं योनिमधितिष्ठत्येको विश्वानि रूपाणि यानीश्च सर्वाः।
ऋषिं प्रसूतं कपिलं यस्तमग्रे ज्ञानैर्बिभर्ति जायमानं च पश्येत्।।

श्वेताश्वतर उप. ५/२।।

इन मन्त्रों व उपनिषद् के पूर्वापर प्रकरणों द्वारा सुस्पष्ट हो जाता है कि वचनों में कहीं पर भी शिवलिंग उपासना का संकेत नहीं है। मन्त्रों में तो **मा शिश्नदेवाः, घ्नन् शिश्नदेवाः**= कामी न आयें, कामियों को हटावें कहकर सुस्पष्ट ही लिंग-उपासना का निषेध है। उपनिषद् वचनों में भी जो योनिम् शब्द आये हैं, वे सम्पूर्ण उत्पत्ति कारण के वाचक हैं, लोक प्रसिद्ध जननेन्द्रिय लिंग के वाचक नहीं।

लिंगोपासना का प्रारम्भकाल

यह लिंगोपासना महाभारत युद्ध के पश्चात् प्रारम्भ हुई। महाभारत में उपमन्यु के आख्यान में ही सर्वप्रथम शिवलिंगोपासना का वर्णन हुआ है, अन्यत्र नहीं। इस उपासना का उद्भावक वाममार्गीय सम्प्रदाय है, जो व्यभिचार प्रधान समुदाय है।

लिंगोपासना रूप व्यभिचार कर्म के उद्भावकों का प्रज्ञापन करते हुए महर्षि दयानन्द ने लिखा है-इन वाममार्गी और शैवों ने संगति करके भग लिंग का स्थापन किया, जिसको जलाधारी और लिंग कहते हैं और उसकी पूजा करने लगे। उन निर्लज्जों को तनिक भी लज्जा न आई, कि यह पामरपन का काम हम क्यों करते हैं? -सत्यार्थप्रकाश एका. पृ. २८२।।

महर्षि के इन वचनों से स्पष्ट है कि लिंगोपासना वाममार्गियों द्वारा चलाया गया वेद-विरुद्ध व्यभिचार कर्म है।

भेड़चाल- लोक शिवलिंग रूप इन ज्योतिर्लिंगों की उपासना भेड़चाल में करता जा रहा है। इस उपासना का बखान भी लोक बड़ी श्रद्धा से करता है। अभी गत २०१६ के १७-२३ नवम्बर को आर.एस.एस. के अध्यक्ष अशोक सिंहल की प्रथम पुण्यतिथि पर आर्यसमाज सम्भाजी नगर, औरंगाबाद द्वारा ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसका ब्रह्मत्व मेरे द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर

पर मैंने औरंगाबाद का भ्रमण भी किया। औरंगाबाद में एक शिवमन्दिर है, उसे दिखाने भी एक भ्राता हमारे साथ गये। उस शिव मन्दिर में प्रवेश करते हुए उन्होंने बताया, १२ ज्योतिर्लिंग हैं, उन १२ ज्योतिर्लिंगों में यह अन्तिम १२ वाँ ज्योतिर्लिंग है। मैंने उनकी बात सुनी, कहा कुछ नहीं। किन्तु उनकी बात सुनकर एक विचार आया, यदि यह ज्योतिर्लिंग है तो प्रकाश क्यों नहीं? यहाँ मन्दिर में बिजली के साधन ट्यूबलाइट आदि क्यों लगे हैं?

ज्योतिः शब्दार्थ-

शिवभक्तो! मन्दिर में जिसे ज्योतिर्लिंग बताया जा रहा है, वह तो अन्धकार का ढेर व पत्थर का टुकड़ा है, ज्योति नहीं। ज्योति तो प्रकाश को कहते हैं। ज्योति शब्द का अर्थ प्रकाश, दीप्ति है। प्रकाश अर्थ वाचक ज्योतिः शब्द द्युत दीप्तौ धातु से **द्युतेरिसिन्नादेश्च जः,** २/११२ उणादि सूत्र द्वारा इसिन् प्रत्यय व दकार को जकारादेश करके सिद्ध होता है। जिसकी व्युत्पत्ति है-

द्योतते प्रकाशते, द्युत्यते प्रकाश्यते वा तत् ज्योतिः ईश्वरोऽग्निः सूर्यादिकम् वा।

अर्थात् जो चमकता है या जिसके द्वारा चमकाया जाता है वह ज्योति कहा जाता है। ईश्वर, अग्नि और सूर्यादि पदार्थ प्रकाश वाले हैं व प्रकाशित करते हैं अतः ये ज्योतिः कहे जाते हैं।

अग्नि परमेश्वर ज्योतिः

ईश्वर के अनेक नामों में एक नाम **अग्नि** है। ईश्वर अग्नि भी कहा जाता है। मन्त्र है-

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्। एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।।

ऋ. १/१६४/४६।।

अर्थात् **सः**=वह, **दिव्यः**=प्रकाशमय, **सुपर्णः**=शोभनीय पालन-पोषण करने वाला, **गरुत्मान्**=बड़ा परमात्मा है, **अथ**=और उस, **एकम् सत्**=एकाकी रूप सत्ता वाले ईश्वर को, **विप्राः**= विद्वान् जन, बहुधा=विविध नामों से, **वदन्ति**=कहते हैं, उसे, **इन्द्रम्**=ऐश्वर्यशाली, **मित्रम्**=मित्ररूप, **वरुणम्**=वरणीय तथा उस, **अग्निम्**=अग्रणी, व्यापक परमात्मा को, **यमम्**=सर्वनियन्ता, **मातरिश्वानम्**=वायुरूप व्यापक, गतिशील, **आहुः**=कहते हैं।

मन्त्र का भाव है कि ईश्वर के अनेक अभिधान हैं, उन अभिधानों में अग्नि नाम भी ईश्वर का है।

यह सर्वव्यापक अग्नि परमेश्वर ही ज्योति है, ज्योति देने वाला है। ज्योति=ज्ञानरूप प्रकाश एवं भौतिक प्रकाश करने वाला है। यजुर्वेद में कहा है-

अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।। यजु. ३/९।।

अर्थात् **अग्निः**= अग्रणी परमेश्वर, (**अग्निरिति पदनाम, निघ. ५/४, अनेन अग्नेर्गत्यर्थकत्वेन ज्ञानरूपत्वात् अग्निः ईश्वरः**), **ज्योतिः**=ज्योतिरूप एवं वेदज्ञान, भौतिक अग्नि, बिजली, सूर्य आदि का प्रकाशक है, **ज्योतिः**=प्रकाशरूप एवं प्रकाशक परमेश्वर ही, **अग्निः**=अग्नि है, स्वाहा=यह सत्यवाणी है, कथन है (**स्वाहा इति वाङ्नाम, निघ. १/११**)।

मन्त्र का सार है कि अग्निः= अग्रणी परमात्मा, ज्योतिः= प्रकाशस्वरूप है, प्रकाशित करने वाला है।

भौतिक अग्नि ज्योतिः

भौतिक अग्नि भी ज्योति है। इस पक्ष में मन्त्र का अर्थ है-

अग्निः=भौतिक अग्नि पदार्थ, (**प्राप्तिहेतुत्वात् अग्निशब्देन भौतिकोऽर्थो गृह्यते**), **ज्योतिः**=दीप्ति वाला है, **ज्योतिः**=दीप्ति ही, **अग्निः**= अग्नि पदार्थ है, **स्वाहा**=यह सत्य कथन है (**स्वाहा इति वाङ्नाम,** निघ. १/११)।

मन्त्र से स्पष्ट है, **अग्निः**= भौतिक अग्नि, **ज्योतिः**=प्रकाश करता है। यह सर्वविदित है रात्रि में प्रकाश का साधन अग्नि ही होता है।

सूर्य परमेश्वर ज्योतिः

ईश्वर के अनेक नामों के मध्य **सूर्य** नाम भी है। अतः वेद में कहा है-

सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। यजु. ३/९।।

अर्थात् **सूर्यः**=प्रेरक, व्यापक जगदीश्वर (**सूर्य इति पदनाम,** निघ. ५/६, **अनेन व्यवहारसिद्धेः ईश्वरः सूर्यः**), **ज्योतिः**=वेदज्ञान द्वारा सकल विद्या-प्रकाशक, ज्ञापक है, यह ईश्वर **ज्योतिः**=चराचर का प्रकाशक, **सूर्यः**=सूर्य है, सर्वव्यापक है, चराचर का उत्पादक है, **स्वाहा**=यह सत्य कथन है।

मन्त्र से स्पष्ट है ईश्वर **ज्योतिः**=ज्ञान, दीप्ति व जगत् का प्रकाशक एवं **सूर्यः**=प्रेरक, व्यापक है।

भौतिक सूर्य ज्योतिः

भौतिक सूर्य भी ज्योतिः कहा जाता है। इस पक्ष में मन्त्रार्थ है-

सूर्यः=सर्व पदार्थों का उत्पादक, प्राप्त कराने वाला सूर्य, **ज्योतिः**=दीप्ति वाला है, **ज्योतिः**=दीप्ति ही, **सूर्यः**= जड़, चेतन का प्रेरक उत्पादक सूर्य है **स्वाहा**=यह सत्य कथन है।

मन्त्र का भाव है **सूर्यः**=भौतिक सूर्य, **ज्योतिः**=प्रकाश आदि दीप्ति का साधन है, यह सूर्य आदिवस प्रकाश देता है, रात्रि के चन्द्र, तारा आदि को भी प्रकाशित करता है।

वेद के इन मन्त्रों से अधिगत है कि **ज्योतिः** ईश्वर है एवं अग्नि व सूर्य ज्योति हैं। अग्निस्वरूप ईश्वर द्वारा प्रदत्त प्रकाशित **ज्योतिः**=दीप्ति अग्नि, सूर्य, विद्युत् आदि रूपों में होती है।

ज्योतिवाच्य शतपथ वचन-

ईश्वरात्मा, जीवात्मा, सूर्य, अग्नि, विद्युत् आदि ज्योति हैं, अतएव शतपथ ब्राह्मण में कहा है-

१. ज्योतिरेवायं पुरुष इत्यात्मज्योतिः।।

शत. १४/७/१/६।।

अर्थात् यह **पुरुष**=ईश्वर व जीवात्मा ज्योति हैं, अतः आत्मज्योतिः कहे जाते हैं।

२. केशा रश्मयः,...केशीदं ज्योतिरुच्यते।।

निरु. १२/३/१४।।

अर्थात् केश रश्मियों को कहते हैं। उनसे युक्त केशी सूर्य कहाता है। यह सूर्य ज्योति कहा गया है।

३. ज्योतिरिन्द्राग्नी। शत. १०/४/१/६।।

अर्थात् **इन्द्र**= विद्युत्, **अग्नि**=भौतिक अग्नि ज्योति हैं।

शतपथ ब्राह्मण के इन वचनों से सुज्ञात है कि ईश्वर, सूर्य आदि ज्योति हैं। ज्योति शब्द के वाच्य ज्ञान, प्रकाश, सामर्थ्य आदि देने वाले पदार्थ कहे जाते हैं, न कि प्रस्तर की बनी लिंगरूप आकृतियाँ।

सूर्य के १२ मास ज्योतिर्लिंग-

लोक में जो १२ ज्योतिर्लिंग जाने जा रहे हैं, वे ज्योति के १२ प्रकार तो सूर्यरूप अग्नि के हैं, अन्य किसी पदार्थ के लिंग आदि के नहीं। सूर्य के इन १२ प्रकारों के द्योतक अनेक मन्त्र हैं। यथा-

द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परि द्यामृतस्य।

ऋ. १/१६४/११।।

अर्थात् **द्यां परि**=पृथिवी द्वारा प्रदक्षिणा करने पर सूर्य के चारों ओर, **द्वादशारम्**=१२ महीनों वाले अरों से युक्त, **ऋतस्य चक्रम्**= संवत्सर का चक्र, **वर्वर्ति**=निरन्तर घूमता है, **नहि तज्जराय**= यह संवत्सर चक्र कभी क्षीण नहीं होता।

ईश्वर पक्ष में मन्त्र का अर्थ है **द्यां परि**=सूर्य के चारों ओर, द्वादशारम्=१२ महीनों वाले अरों से युक्त, **ऋतस्य चक्रम्**=संवत्सर काल चक्र को ईश्वर निरन्तर घुमाता है, **तत्**= परमेश्वर का यह संवत्सर चक्र, नहि जराय=क्षीण नहीं होता।

इसी प्रकार अन्य मन्त्र में कहा-

द्वादशप्रधयश्चक्रमेकम्।। ऋ. १/१६४/४८।।

अर्थात् **एकम् चक्रम्**= परमेश्वर संवत्सररूपी एक चक्र बनाता है, जिसमें, **द्वादशप्रधयः**=महीने रूप १२ परिधियाँ हैं।

मन्त्रों से सुस्पष्ट है कि १२ ज्योतियाँ १२ मासों की दीप्तियाँ कही जातीं हैं, जिन्हें परमात्मा ने निर्मित किया है। ये १२ मास ही ज्योतिर्लिंग हैं। १२ मासों वाला सूर्य शिव है, कल्याणकारी है। १२ मासों की साम्यता से ही १२ शिवलिंग कल्पित किये गये हैं। यदि ये यथार्थ होते, तो शिव के निरन्तर मन्दिर नहीं बनाए जाते। आज जो बिना ही शिवलिंग के टुकड़ों के मन्दिर बनते जा रहे हैं, वे ज्ञापित करते हैं कि १२ शिवलिंगों की यह कोरी कल्पना है।

शिवभक्त! आँखें खोलें! यथार्थ जानें। प्रलय के पश्चात् सृष्टि के आदि में काल चक्र के ज्ञापक दीप्ति वाले सूर्य का ही उदय होता है। इस तथ्य से ज्योतिषशास्त्रविद् भलीभाँति परिचित हैं। अहोरात्र के जो २४ होरा हैं, उनमें सर्वप्रथम सूर्य का ही प्रथम उदय दिखाया जाता है।

शिवभक्त इन १२ ज्योतियों के यथार्थ रहस्य से अनभिज्ञ हैं, तभी तो अनादि तत्त्व शिव की लिंगरूप कल्पना करके लिंगोपासना में रत हैं। अन्यच्च ज्योतिर्लिंग के प्रादुर्भूत होने

की कथा कहानी कहने में लगे हैं।

महर्षि दयानन्द का ज्योतिर्ज्ञान-

महर्षि दयानन्द अपूर्व योगी, ज्ञानी, ध्यानी थे। उन्होंने योगबल से अनादि ज्योतिरूप ईश्वर का स्वरूप जान लिया और पहचान लिया, साथ ही भौतिक अग्नि व सूर्य के १२ ज्योतिरूपों को भी जाना और पहचाना। दैनिक नित्यकर्म अग्निहोत्र के मध्य यजुर्वेदीय **अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा**, मन्त्रों का विनियोग कर सभी के ज्ञान-चक्षु भी खोले। इन मन्त्रों की व्याख्या में महर्षि दयानन्द ने लिखा-

अग्निर्जगदीश्वरः स्वाहा ज्योतिः सर्वस्मै ददाति एवं भौतिकोऽग्निः सर्वप्रकाशकं ज्योतिर्ददाति।

सूर्यश्चराचरात्मा स्वाहा ज्योतिः सर्वात्मसु ज्ञानं ददाति। अयं सूर्यलोको ज्योतिर्दानं मूर्तद्रव्यप्रकाशनं च करोति।

दया. भा. यजु. ३/९।।

अर्थात् अग्नि जगदीश्वर **स्वाहा**=वेदवाणी व प्रकाशक पदार्थों का प्रकाश सबके लिये देता है एवं भौतिक अग्नि सब पदार्थों की प्रकाशक दीप्ति को देता है।

सूर्यरूपी चराचर का आत्मा ईश्वर **ज्योतिः**=सभी की आत्माओं में ज्ञान देता है। यह सूर्यलोक दीप्ति का दान करता है और मूर्त पदार्थों को प्रकाशित करता है।

महर्षि दयानन्द ने **ज्योतिः**=प्रकाश के आधार, **अग्निः**=तेज के आधार अग्रणी परमेश्वर की प्राप्ति एवं **ज्योतिः**=भौतिक अग्नि व सूर्य रूप प्रकाश के साधनों का यह ज्ञान व सामर्थ्य तब प्राप्त किया था, जब उन्होंने सबकी भाँति अपने पूज्य पिता कर्षणलाल जी के आग्रह पर फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को शिवरात्रि का व्रत किया था, व्रत-देवता शिव का जो स्वरूप सुना था, उसे न पाकर अपना व्रत तोड़ा था और सच्चे शिव की खोज का संकल्प लिया था।

लिंगोपासना व्यभिचार व वेद-विरुद्ध कर्म-

महर्षि दयानन्द व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र के बड़े परोपकारी हितैषी थे। उन्होंने शिवलिंगोपासना को निरर्थक कर्म विज्ञापित करते हुए जनमानस के हितार्थ लिखा है-

शिवपुराण में बारह ज्योतिर्लिंग लिखे हैं। उसकी कथा सर्वथा असंभव है। नाम धरा है ज्योतिर्लिंग और जिनमें प्रकाश का लेश भी नहीं। रात्रि को बिना दीप किये लिंग भी अन्धेरे में नहीं दीखते। यह सब लीला पोप जी की है। सत्यार्थप्रकाश एकादश. पृ. ३२०।।

इस प्रकार महर्षि का सन्देश है कि शिवलिंगोपासना कल्पित, व्यभिचारपूर्ण कर्म है, जो सर्वथा त्याज्य है। शिवभक्त जागें, १२ ज्योतियों के सत्यस्वरूप ईश्वर, अग्नि व सूर्य आदि को जानें, पहचानें। ईश्वर की उपासना करें, अग्नि, सूर्य से उपयोग लें।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में वर्ष २०१२ से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091 email : psabhaa@gmail.com

सर हथेली पे लिये फिरते हैं
(महाशय राजपाल जी)

सोमेश पाठक

८ अप्रैल सन् १९२९ की बात है, सुबह के आठ भी न बजे होंगे कि सारे लाहौर में पुलिस तैनात थी। कर्फ्यू लगा हुआ था, सारा बाजार बन्द था। सड़कों पर सिर्फ खाकी पोश में राइफलधारी दिखते थे। लोग पुष्प ले-लेकर अपनी-अपनी छतों पर चढ़ गये थे। हाथों मे पुष्प और आँखों में आँसू, गला मारे रुदन के हिचकियां भरता था। पर नजर टिकी थीं रास्तों पर। लगता है जैसे किसी का इन्तजार था। कहते हैं कुछ ही देर में इन रास्तों पर किसी बलिदानी का जनाजा निकलने वाला था। हाय! वो मञ्जर कि जिसे देख कायनात को भी रोना पड़ा था। हाय! कि आँखें फटी की फटी रह जायें। अरे! देखने वालों की छातियाँ धड़कती थीं। यही कोई २५ से ३० हजार का जन- समूह उमड़ पड़ा था उस जनाजे के साथ। क्या अमृतसर, जालन्धर और दिल्ली? क्या कलकत्ता और बम्बई? ऐसा कोई शहर न बचा था जहाँ के लोग उस बलिदानी की अन्तिम यात्रा में सम्मिलित न हुए हों। अर्थी को कुछ लम्बा और विशेष बनाया गया था कि जिससे कई लोग एक साथ कन्धा दे सकें। इतिहास बताता है कि वहाँ कन्धा देने की होड़ लगी हुई थी। सब छटपटा रहे थे कि किसी तरह अर्थी छूने को मिल जाये तो धन्य हो जायें। लोग अपनी-अपनी छतों से पुष्प-वर्षा कर रहे थे। आसमान जय-जयकारों के भीषण नादों की प्रतिध्वनि करने में स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा था, क्योंकि यह केवल उसी के साहस की बात थी। लाहौर की धरती तो मानो भूमि-कम्प कर आह्वान सा कर रही थी। एक-एक घोष बिजली सी कड़काता था। ये अर्थी किसी और की नहीं बल्कि **'अमर हुतात्मा महाशय राजपाल जी'** की थी। वो कि जिसने आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में अपने जीवन को आहूत कर दिया था। वो कि जिसने पं. लेखराम और स्वामी श्रद्धानन्द सरीखे बलिदानियों में अपना नाम लिखा लिया था।

उसी हुतात्मा के जीवन को चन्द शब्दों में समेटने का दुस्साहस इस कलम ने किया है, जो कि असम्भव है। कम्बख्त! ये भी न जानती कि तेरी स्याही के स्याह की औकात नहीं कि वह रक्त का वर्णन कर सके। कुछ दास्तानें कहने में कही नहीं जातीं और न लिखने में लिखी जातीं। यह दास्तां भी उन्हीं में की है जो कलम और जुबां दोनों को मूक कर देती है। पाठक इस दुस्साहस को नादानी समझकर क्षमा करें।

अभी दो ही दिन तो हुये थे (अर्थात् ६ अप्रैल सन् १९२९ को) किसी इल्मुदीन नामक मतान्ध मुस्लिम ने अपनी दुकान में विश्राम कर रहे महाशय राजपाल की छाती में छुरा घोंप कर हत्या कर दी। वैसे महाशय जी पर यह कोई प्रथम वार न था। मुस्लिमों की ओर से पहले भी इस तरह की कोशिशें हो चुकी थीं। पर मौत शायद, नहीं नहीं अमरता शायद इसी छुरे के इन्तजार में थी। आखिर ऐसा क्या बिगाड़ा था महाशय जी ने मुस्लिमों का? चलिये जानते हैं।

ये वो दौर था जब ऋषि के दुलारों ने अंग्रेजी हुकूमत और तथाकथित धर्म, दोनों की जड़ें हिला दी थीं। जिधर देखो उधर ऋषि का डंका बजता था। आर्यसमाज के प्रश्न का उत्तर किसी के पास न था। परिणाम यह कि खिसियाई बिल्लियाँ खम्भा नोच रही थीं। आर्यसमाज में कुछ बलिदान हो चुके थे और कुछ होने वाले थे। सन् १९२३ में मुसलमानों की ओर से दो पुस्तकें प्रकाशित हुईं- **१. कृष्ण तेरी गीता जलानी पड़ेगी २. उन्नीसवीं सदी का महर्षि।** पुस्तकें तो क्या थीं गालियों की बौछार थीं। बेचारों ने दयानन्द और कृष्ण पर अपनी भड़ास निकाली थी। महाशय जी को, जो कि उस समय आर्यसमाज के समर्पित प्रचारक, योग्य लेखक, योग्य सम्पादक और योग्य प्रकाशक थे, यह बात ठीक न लगी। उन्होंने इसका उत्तर देने की ठानी और आग्रह किया उस समय के लौह लेखक आचार्य पण्डित चमूपति जी से, कि आप इन पुस्तकों के प्रतिकार में पुस्तक लिखें। पण्डित जी ने महाशय जी का आग्रह स्वीकार

किया और एक पुस्तक लिखी जिसका नाम था 'रंगीला रसूल'। सत्य का इतना व्यंग्यात्मक स्वरूप भी हो सकता है यह इस पुस्तक में बखूबी दिखा दिया गया था। 'रंगीला रसूल' हजरत मौहम्मद सल्लल्लाहु-अलैहिवसल्लम की जीवनी थी। पवित्र अथवा जो भी...पर थी प्रामाणिक। यहाँ यह स्मरण रहे कि पहल आर्यसमाज की न थी बल्कि अनावश्यक कीचड़ उछालनेवालों को उनके कीचड़ में धंसे होने का एहसास कराया गया था। पुस्तक को महाशय राजपाल जी ने प्रकाशित कर दिया और लेखक के स्थान पर लिखा गया 'दूध का दूध और पानी का पानी'। सभवत: लेखक के साथ अनहोनी होने का संशय रहा हो और फिर पण्डित चमूपति जी ने भी महाशय जी से वचन लिया हुआ था कि उनका नाम प्रकाशित न किया जाये। पुस्तक सन् १९२३ में छपी और लगभग डेढ़ वर्ष तक सारे पंजाब में (अर्थात् मुस्लिमबहुल क्षेत्र में) धड़ल्ले से बिकी। किसी को कोई आपत्ति नहीं हुई, किसी भी मुस्लिम पत्र में एक टिप्पणी भी न छपी। इसके बाद यह पुस्तक महात्मा (काश कि होते) गाँधी के हाथ लगी। उन्होंने अपने साप्ताहिक पत्र 'यंग इण्डिया' के २४ मई १९२४ के अंक में इस पुस्तक पर एक टिप्पणी कर दी। शीर्षक था 'आग भड़काने वाली पुस्तक'। पुस्तक आग भड़काने वाली थी या नहीं, यह तो बीते डेढ़ वर्ष को मालूम होगा। पर यह टिप्पणी जरूर आग भड़काने वाली सिद्ध हुयी। न सिर्फ यही टिप्पणी, बल्कि आगे आने वाले ८-१० अंकों में गाँधी जी ने इस पुस्तक के विरोध में ही लिखा। बस फिर क्या था? मुसलमानों को कारण मिल गया। राजपाल जी के विरुद्ध मुकद्दमा चल पड़ा और लगभग चार वर्ष तक चला। अन्ततोगत्वा पंजाब हाईकोर्ट ने महाशय जी को निर्दोष माना। इसी समय में महाशय जी को आये दिन धमकियां मिलती रहती थीं। प्राणघातक हमले भी हुए थे। यह भी कहा गया कि लेखक का नाम बता दें तो महाशय जी को कोई खतरा नहीं रहेगा। पर वो धर्म का धुनी डिगने वाला कहाँ था? अब मुहम्मदिये क्या जानें कि ये राम और कृष्ण के वंशज वचन के आगे प्राणों को तुच्छ समझते हैं। और वही महाशय राजपाल ने किया भी...।

महाशय जी की शहादत ने उन्हें सम्मान के शिखर पर पहुँचा दिया। लोग उन्हें हुतात्मा कहने लगे। जो कि महात्मा, नहीं-नहीं क्षमा करना मोहनदास गांधी को बर्दाश्त न हुआ। उन्होंने अपने 'यंग इण्डिया' में लिखा-

''राजपाल की हत्या ने उन्हें शहीद बना दिया है और उन्हें वह कीर्ति प्राप्त हो गयी है जिसके वह योग्य न थे। अपनी प्रकाशित किताब द्वारा हुए नुकसान की भरपाई वह कर चुके थे, उसके लिये कष्ट भी सह चुके थे।''

इस टिप्पणी से उस समय के क्रान्तिकारी वर्ग में रोष उत्पन्न हो गया। अनेक बड़े नेताओं ने इसका प्रतिवाद किया। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी वीर सावरकर ने कड़े शब्दों में 'दैनिक केसरी' में इसकी आलोचना की। उन्होंने लिखा कि ''तीन बार प्राणों पर बीतने के बावजूद महाशय राजपाल ने हिन्दू धर्म की प्रतिष्ठा तथा हिन्दुत्व का यथार्थ अभियान नहीं छोड़ा इसलिये वह सच्चा धर्मवीर था। अत: संगठन के अभिमानी लाखों हिन्दुओं ने उस पर कृतज्ञता के फूल बिखेरे और इसलिये महात्मा गाँधी को वह बुरा लगा। संगठन का प्रचण्ड आन्दोलन तो उनकी गाली-गलौच के बाद भी फल-फूल रहा है। यह उन्हें सहन नहीं होता। यही सच्ची बात है। इसका नजला उतारने के लिये वे बिना सोचे उस राजपाल की निन्दा करते हैं, जिसे संगठनवादी हिन्दू 'धर्मवीर' कहते हैं।'' (विस्तृत जानकारी के लिये देखें- समग्र सावरकर वाङ्मय, भाग-४, पृष्ठ २२५ से २३०)

अमृतसर की गलियों में नंगे पांव खेलने वाला घसीटाराम आगे चलकर देश-धर्म और जाति पर बलिदान होगा और अमर हुतात्मा महाशय राजपाल कहलायेगा-यह किसी ने सोचा भी न होगा। महाशय जी का जन्म यहीं अमृतसर में लाला रामदास जी के यहाँ पंचमी आषाढ़ संवत् १९४२ को हुआ था। पं. लेखराम द्वारा स्थापित 'आर्य डिबेटिंग क्लब' से प्रभावित होकर आप आर्यसमाजी बने। पिता घर छोड़कर न मालूम कहाँ चले गये। माता तथा छोटे भाई सन्तराम के जीवन-निर्वाह का भार भी आपके ऊपर आ गया। घर में गरीबी थी ही, इस कारण बहुत छोटी आयु में भी आपने नौकरियां कीं तथा परिवार का पेट पाला। प्रारम्भ में आपने हकीम फतहचन्द जी के यहाँ 'किताबत' की नौकरी की। स्वामी श्रद्धानन्द के 'सद्धर्म

प्रचारक' में भी सेवायें दीं। महाशय कृष्ण के 'प्रकाश' में भी कार्य किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी का आप पर बहुत प्रभाव था। आप न केवल पेशे के तौर पर कार्य करते थे बल्कि आर्यसमाज के लिये जी-जान लगाते नजर आते थे। इसलिये आपके साथ कोई स्वामी-सेवक का रिश्ता न निभाता था बल्कि मित्र बन जाते थे। आपकी प्रतिभा को देखते हुये महाशय कृष्ण ने आपको प्रकाशन खोलने की सलाह दी जो कि महाशय राजपाल जी का रुचिकर विषय भी था। प्रकाशन खोलने के लिये महाशय कृष्ण जी ने आपको धन भी दिया जो कि बाद में आपके द्वारा लौटाये जाने पर भी वापस न लिया गया। इसके बाद महाशय राजपाल ने अनेक उच्चकोटि की पुस्तकें छापीं। सारे देश में उनके प्रकाशन की धाक जम गयी। प्रकाशन के क्षेत्र में उन्होंने कई बड़े कार्य कर दिखाये जो कि उनके बाद कोई कर न पाया। उन्होंने आर्य जन्तरी व डायरेक्ट्री का कई वर्षों तक प्रकाशन किया जो कि अपने आप में बहुत श्रमसाध्य कार्य था, जिसके कारण आर्यजगत् का इतिहास सुरक्षित हो सका। हर बड़े इतिहासज्ञ ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। जो कि अब कहाँ होंगीं? यह उत्तर के योग्य प्रश्न नहीं, खेद का पर्याय है।

कई बड़े विद्वानों के लेखों और व्याख्यानों को छपवाया। यथा-आचार्य रामदेव, महात्मा हंसराज, स्वामी सर्वदानन्द जी आदि। उन्होंने लेखन-कार्य भी बड़े स्तर पर किया। प्रो. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी का कहना है कि अगर राजपाल जी के लेखों को एकत्रित कर छपवाया जाता तो लगभग ४५०० पृष्ठों का कई खण्डों में ग्रन्थ तैयार हो जाता। पर यहाँ भी 'अगर' शब्द खेद का ही द्योतक है।

महाशय जी के चार पुत्र थे। प्राणनाथ, दीनानाथ, विश्वनाथ, और सुरेन्द्र नाथ। महाशय जी के अन्तिम संस्कार के बाद ईश्वर प्रार्थना स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने करवायी। प्रार्थना के बाद भीड़ में एक देवी उठ खड़ी हुयी, जिनकी गोद में डेढ़ वर्ष का बालक सुरेन्द्रनाथ था। कहने लगी- ''अपनी बहिनों व भाइयों को कहना चाहती हूँ कि मुझे अपने पति के इस प्रकार मारे जाने का दु:ख अवश्य है पर साथ ही उनके धर्म की वेदी पर बलिदान देने से अभिमान भी है। वे मरकर अपना नाम अमर कर गये हैं।'' इस देवी का नाम श्रीमती सरस्वती देवी 'जिज्ञासु' था जो कि महाशय जी की धर्मपत्नी थीं।

यूँ तो महाशय जी के जीवन की अनेक घटनाओं का उल्लेख किया जा सकता है, पर विस्तार भय के कारण हम ऐसा कर नहीं रहे हैं, और फिर जिसकी मौत ही उसकी जिन्दगी की दास्ताँ बयां कर रही हो, तो भला यह तुच्छ लेखनी उस महान् आत्मा के विषय में लिख भी क्या सकती है?

महाशय राजपाल वो व्यक्ति थे जिन्होंने सोयी पड़ी हिन्दू जाति की ठण्डी रगों में गर्म रक्त का संचार कर दिया था। तभी तो मशहूर पत्रकार व कवि नानकचन्द 'नाज' ने कहा था कि-

फख्र से सर उनके ऊँचे आस्मां तक हो गये।
हिन्दुओं ने जब तेरी अर्थी उठाई राजपाल।
फूल बरसाये शहीदों ने तेरी अर्थी पे खूब।
देवताओं ने तेरी जय-जय बुलायी राजपाल।।

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३

राजा और प्रजाजन परस्पर सम्मति से समस्त राज्य व्यवहारों की पालना करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.२६

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेषकर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४

संस्था-समाचार

होली पर्व सम्पन्न- २ मार्च शुक्रवार को वासन्ती नवसस्येष्टि पर्व के अवसर पर ऋषि उद्यान में प्रात: काल विशेष यज्ञ किया गया। तत्पश्चात् ९बजे से १२ बजे तक भजन, प्रवचन हुए। इस कार्यक्रम में श्रीमती मनीषा शास्त्री, श्रीमती विजय शर्मा, ब्र. शिवनाथ आर्य वैदिक, ब्र. ज्ञाननिष्ठ आर्य, ब्र. ज्ञानप्रकाश आर्य, श्री लक्ष्मण मुनि, युवा कवि श्री हेमन्त आर्य, श्री विजय सिंह गहलोत, आर्य समाज केसरगंज के मंत्री श्री चान्दराम आर्य आदि ने पर्व के विषय में अपने-अपने विचार व्यक्त किये। श्री शान्तिदेव जी आर्य एवं श्रीमती कुमुदिनी आर्य ने अलग-अलग राजस्थानी लोक गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का समापन स्वामी विष्वङ् परिव्राजक जी के व्याख्यान के पश्चात् हुआ। श्री वासुदेव आर्य जी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए होली गीत सुनाया। कार्यक्रम में श्रीमती ज्योत्स्ना धर्मवीर जी, श्री सुभाष नवाल जी, श्री रामगोपाल गर्ग जी, नगर आर्यसमाज के अधिकारी, सदस्य एवं अन्य नगरवासी सपरिवार उपस्थित रहे। दोपहर सामूहिक भोज के पश्चात् होली का यह उत्सव हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

विवाह वर्षगाँठ, पुण्यतिथि पर यज्ञ- ऋषि उद्यान की यज्ञशाला में ६ मार्च को श्री रमेश मुनि जी ने अपने पिता श्री पृथ्वीराज जी की स्मृति में यज्ञ किया । ८ मार्च को ब्यावर निवासी श्री अशोक आर्य ने अपने विवाह वर्षगांठ पर यज्ञ किया। सभा के कोषाध्यक्ष श्री सुभाष नवाल और उनके भाई श्री ओमप्रकाश नवाल ने अपने पिता स्व. मथुराप्रसाद नवाल की स्मृति में यज्ञ किया।

अतिथि- अजमेर नगर में केसरगंज स्थित ऐतिहासिक महर्षि दयानन्द आश्रम, अनुसन्धान भवन एवं वैदिक पुस्तकालय, ऋषि निर्वाण स्थल-भिनाय कोठी, ऋषि उद्यान स्थित महर्षि दयानन्द सरस्वती संग्रहालय, महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल आदि देखने, संन्यासियों-विद्वानों से मिलकर शंका-समाधान करने, उपदेश ग्रहण करने, दैनिक यज्ञ एवं प्रवचन से लाभ लेने, पुष्कर आदि पर्यटन स्थलों में भ्रमण एवं आर्यसमाज के प्रचार के लिए देश-विदेश के संन्यासी, वानप्रस्थी, विद्वान्, ब्रह्मचारी, आर्यवीर, आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता, गृहस्थ स्त्री-पुरुष और बच्चे निरन्तर आते रहते हैं। सभी आगन्तुकों के निवास एवं नाश्ता, भोजन, दूध आदि की समुचित व्यवस्था ऋषि उद्यान में उपलब्ध रहती है। पिछले १५ दिनों में झालना, ब्यावर, जयपुर, इटारसी, बैंगलोर, दिल्ली, कोटा, अहमदाबाद हरिद्वार, बागपत, चाँपानेरी, उदयपुर, झोसूकलां, बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बांदा, चांपानेर, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों से ५९ अतिथि आये। इसी क्रम में माँ शारदा कन्या विद्यापीठ, अमरकण्टक म.प्र. की ३६ बालिकाएँ बस द्वारा ऋषि उद्यान देखने आयीं।

दैनिक प्रवचन-प्रात: कालीन सत्संग में आचार्य सत्येन्द्र जी एवं आचार्य सोमदेव जी के व्याख्यान हुए। सोमवार से शुक्रवार तक सायंकालीन सत्संग में आचार्य सत्येन्द्र जी के व्याख्यान हुए। शनिवार सायंकालीन प्रवचन में श्रीमती विजय शर्मा जी ने अपने विचार प्रस्तुत किये एवं डॉ. नन्दकिशोर काबरा जी ने कवितापाठ किया। रविवार प्रात:कालीन सत्संग में ब्र. उत्तम जी ने भजन सुनाया तथा सायंकालीन प्रवचन में ब्र. मनोज जी ने व्याख्यान किया।

एन.डी.आर.एफ. द्वारा पूर्वाभ्यास- ऋषि उद्यान के आनासागर तट पर १४, १५ मार्च को राष्ट्रीय आपदा सुरक्षा बल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बाढ़ से लोगों को बचाने का पूर्वाभ्यास किया। इस पूर्वाभ्यास में तैराकों, गोताखोरों, बोटचालकों एवं अन्य सहायक कर्मचारियों ने तीव्र गति से बचाव कार्य करने का प्रदर्शन किया। बाढ़ में फँसे लोगों की सहायता के लिये काम आने वाले अत्याधुनिक उपकरणों, दूरसंचार के साधनों तथा घटनास्थल पर तत्काल बनाये जा सकने वाले सहायक साधनों की प्रदर्शनी भी लगाई गई। १५ मार्च को प्रात: ११ बजे समापन अवसर पर अजमेर के जिलाधीश, आई. जी., पुलिस के अन्य अधिकारीगण, एन. डी. आर. एफ. राजस्थान एवं गुजरात के अधिकारीगण, स्वामी विष्वङ् परिव्राजक, आर्यवीर दल के जिला मंत्री श्री विश्वास पारीक, आर्ष गुरुकल ऋषि उद्यान के आचार्य एवं ब्रह्मचारीगण तथा वानप्रस्थी, संन्यासीगण उपस्थित रहे।

आर्यजगत् के समाचार

१. प्रवेश प्रारम्भ- आर्ष कन्या गुरुकुल भुसावर, जि. भरतपुर, राज. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय तथा राज.मा.शि. बोर्ड से मान्यता प्राप्त है। शास्त्रीय संगीत एवं वाद्ययन्त्र, कम्प्यूटर, सिलाई-प्रशिक्षण अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। कम्प्यूटर का आर.एस.सी.आई.टी. डिप्लोमा भी कराया जाता है। कन्या गुरुकुल में शिक्षा के अनुकूल वातावरण, आधुनिक सुविधायुक्त छात्रावास, सुन्दर यज्ञशाला, विद्यालय भवन, क्रीडास्थल आदि की सुन्दर व्यवस्था है। कक्षा ५ से ७ में प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है। इस वर्ष केवल २५ छात्राओं को ही प्रवेश दिया जाएगा। जिन बेटियों के माता-पिता नहीं हैं, निर्धन हैं, उनके लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था है। आर्य महिला भजनोपदेशिका विद्यालय में भी प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। भजनोपदेशिका बनने की इच्छुक छात्रा शीघ्र सम्पर्क करें। सम्पर्क- ९६९४८९२७३५, ८४४१०८७४०८

२. मकर संक्रान्ति मनाई- आर्यसमाज डोहरिया, भीलवाड़ा, राज. द्वारा १४ जनवरी २०१८ को श्री राधेश्याम सुथार-माण्डलगढ के घर पर मकर संक्रान्ति का यज्ञ किया गया। दि. १६ फरवरी २०१८ को श्री महावीर सुथार-पनोतिया के घर पर पं. अमरसिंह-ब्यावर के द्वारा वेद प्रचार कार्य व सत्संग का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

३. होली महोत्सव मनाया- जींद, नरवाना मार्ग स्थित शान्तिधर्मी परिसर में होली का पर्व वैदिक रीति से मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सुनील शास्त्री उचाना ने विधि-विधान से यज्ञ सम्पन्न कराया जिसमें सात किलोग्राम शुद्ध घी, पुष्कल सामग्री और नये अन्न की आहुतियाँ दी गईं।

४. सम्मानित- स्वतन्त्रता सेनानी स्व. श्री छोटूसिंह आर्य संस्थापक प्रधान, आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर की ११वीं पुण्यतिथि एवं श्रीमती शारदा देवी की पंचम पुण्यतिथि के अवसर पर दि. २३ फरवरी २०१८ को आर्यसमाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर, राज. में यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा हुई, जिसकी अध्यक्षता श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता ने की। इस अवसर पर श्री सत्यव्रत सामवेदी-जयपुर को 'कर्मवीर आर्य श्रेष्ठ' की उपाधि एवं ११ हजार रुपये से सम्मानित किया गया। आर्य कन्या विद्यालय समिति द्वारा संचालित संस्थाओं में से चयनित सर्वश्रेष्ठ अध्यापिका श्रीमती अंजु माथुर को शॉल ओढ़ाकर ३१००/- रु. से सम्मानित किया गया तथा जरूरतमन्द प्रतिभाशाली छात्राओं को पं. विद्यावाचस्पति मैमोरियल ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा पुरुस्कृत किया गया।

५. वासन्ती नवसस्येष्टि पर्व मनाया- होली के अवसर पर अजमेर नगर के ब्लॉसम स्कूल प्रांगण में यज्ञ, भजन, प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। यहाँ रंगों के स्थान पर फूलों की वर्षा करके होली खेली गई। कॉलोनीवासी श्रद्धालु यज्ञ द्वारा होली पर्व मनाकर आनन्दित हुए। इस कार्यक्रम में ऋषि उद्यान की ओर से श्रीमती ज्योत्स्ना 'धर्मवीर', आचार्य सत्येन्द्र, स्वामी सोमानन्द, श्री प्रभाकर आर्य एवं श्री वासुदेव आर्य सम्मिलित हुए। इस स्कूल में सादगीपूर्वक होली उत्सव पिछले १५ वर्षों से निरन्तर आयोजित किया जा रहा है।

६. सत्संग का आयोजन- ग्राम दाउदपुर, जि. छपरा में श्री विजयबहादुर सिंह ने श्री कृष्णकुमार सिंह की प्रेरणा से अपने ५०वें जन्मदिवस के अवसर पर शिथिल पड़ी आर्यसमाज में ४ दिवसीय सत्संग का आयोजन किया, जिसमें श्री आनन्द पुरुषार्थी को यज्ञ का ब्रह्मा नियुक्त किया गया। कार्यक्रम के पश्चात् श्री विजय बहादुरसिंह को ही आर्यसमाज के नये प्रधान के रूप में नियुक्त किया गया।

७. शिविर सम्पन्न- परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षित श्री लक्ष्मीनारायण आर्य द्वारा आर्यसमाज नीमच, मध्य प्रदेश में १८ से २१ फरवरी २०१८ तक ध्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें १४ साधकों ने भाग लिया।

८. यज्ञ सम्पन्न- भारतीय नवसम्वत्सर अभिनन्दन के अवसर पर स्थानीय मोदी मोहल्ले, सोजत, राज. में स्वतन्त्रता सेनानी रुचिर परिवार द्वारा विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य यजमान समाजसेवी पार्षद मंजू-कैलाश

अखावत थे। आर्यसमाज की प्रधाना श्रीमती लीलावती आर्या के पौरोहित्य में नगर के गणमान्य नागरिकों ने यज्ञ में अपनी आहुतियाँ दीं। इस अवसर पर भजन-कीर्तन आदि भी हुए।

९. स्थापना दिवस मनाया- आर्यसमाज मन्दिर, महर्षि पाणिनि नगर, मगरा पूँजला, जोधपुर, राज. तथा 'नृसिंह जी की प्याऊ मार्केट एसोसियेशन' के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित यज्ञ में आहुतियों के साथ भारतीय नववर्ष व आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा शिवराम शास्त्री थे।

१०. संस्कृताध्ययन- उच्चारण-शुद्धि, सामान्य संस्कृत, पाणिनीय व्याकरण (अष्टाध्यायी), दर्शन-शास्त्र आदि विषयों की कक्षाएँ इन्टरनेट (स्काइप) पर चलती हैं। अध्ययन के इच्छुक सम्पर्क करें- आचार्य सत्यवान् आर्य, दूरभाष व वाट्सअप संख्या- ९४६७२४८७७७

११. आर्यसमाज स्थापना दिवस- आर्यसमाज स्थापना दिवस व सैक्टर-२७ चण्डीगढ़ का वार्षिक उत्सव नवसंवत्सर पर १७ व १८ मार्च २०१८ को चण्डीगढ़ की २७-सी आर्यसमाज में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर चण्डीगढ़ पंचकूला व मोहाली की विभिन्न आर्यसमाजों तथा आसपास से आए सैकड़ों लोगों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई तथा धर्मलाभ उठाया। यज्ञ पश्चात् दोनों दिन फिरोजपुर, पंजाब से आए भजनोपदेशक श्री विजय आनन्द ने भजन व उपदेश किए। १८ मार्च को नवसंवत्सर पर यज्ञ पश्चात् पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के संस्कृत विभाग एवं दयानन्द शोध पीठ के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विक्रम विवेकी के ओजस्वी भाषण भी हुए।

१२. नवसंवत्सर मनाया- आर्यसमाज हिरणमगरी, उदयपुर, राज. ने आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं नवसंवत्सर पर्व के उपलक्ष्य में श्रीमती ललिता मेहरा एवं श्री मुकेश पाठक के नेतृत्व में भव्य प्रभात फेरी निकाली, जिसमें सैकड़ों की संख्या में महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। तत्पश्चात् समाज-मन्दिर में श्री रामदयाल के पौरोहित्य में पर्व विशेष पर यज्ञ का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि श्री अशोक आर्य ने सभा भवन पर ध्वजारोहण किया और श्रीमती सरला गुप्ता ने सामूहिक ध्वजगीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर दयानन्द कन्या विद्यालय की छात्राओं ने चौराहों पर आगंतुकों का तिलक-प्रसाद द्वारा स्वागत किया।

चुनाव समाचार

१३. आर्यसमाज सोजत, राज. के चुनाव में **संरक्षक**- श्री दलवीर राय व श्रीमती गीतादेवी भटनागर, **प्रधाना**- श्रीमती लीलावती आर्या, **मन्त्री**- श्री हीरालाल आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री नवनीत राय को चुना गया।

ऋषि दयानन्द ने कहा था

सत्य का स्वरूप और सत्यार्थ का ग्रहण करना

जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहलाता है। विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें। **(स.प्र. भूमिका)**

विद्वान् एकमत हो प्रीति से वर्ते

यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मतों में हैं, वे पक्षपात छोड़, सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक-दूसरे के विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें वर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों (साधारण जनों) में विरोध बढ़कर अनेकविध दु:ख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। **(स. प्र. भू.)**